Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6
अंक- 14

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

25 शअबान 1442 हिज्री कमरी 08 शहादत 1400 हिज्री शम्सी 08 अप्रैल 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

इस्तेखारे की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ (اَوْقَالَ عَاجِلِ اَمْرِيْ وَآجِلِهٖ) فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ (اَوْقَالَ فِيْ عَاجِلِ اَمْرِيْ وَآجِلِهٖ) فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِيْ بِهٖ قَالَ وَيُسَمِّيْ حَاجَتَهٗ

हे मेरे अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे इलम के अधीन बेहतरी चाहता हूँ और तेरी क़ुदरत की बदौलत ताक़त चाहता हूँ और तेरे बहुत ही बड़े फ़ज़लों का तुझसे प्रश्न करता हूँ। तुझ को क़ुदरत है मुझे क़ुदरत नहीं और तुझ को ज्ञान है मुझे ज्ञान नहींऔर तू भविष्य की बातों को ख़ूब जानने वाला है। हे मेरे अल्लाह! यदि तू जानता है कि यह काम मेरे लिए धर्म में और मेरी रोज़ी में और मेरे उस काम के अंजाम के लिहाज़ से बेहतर है (या फ़रमाया : उस वक़्त या भविष्य के लिए बेहतर है) तू मुझे वह नसीब कर और उसको मेरे लिए आसान कर दे और फिर इस में मेरे लिए बरकत डाल और यदि तू जानता है कि यह काम मेरे लिए मेरे धर्म में और मेरी रोज़ी में और मेरे इस काम के अंजाम के लिहाज़ से नुक़्सानदेह है या फ़रमाया : उस वक़्त और भविष्य के लिए हानिकारक है) तू उस को मुझसे हटा दे और मुझे भी उस से हटा दे और जहां मेरे लिए भलाई मुक़द्दर हो, वहां से मुझ को प्रदान कर। फिर मुझे उस पर राज़ी रख। रावी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया और दुआ में अपने काम का नाम ले।

(बुख़ारी, भाग 2 किताब तहज्जुद, प्रकाशन क़ादियान 2006)

जैसे अल्लाह तआला हमारी भूलों पर शीघ्र नज़र नहीं करता और अपनी सुतारी के कारण अपमानित नहीं करता तो हमको भी चाहिए कि हर ऐसी बात पर जो किसी दूसरे की लज्जा या अपमान पर आधारित हो शीघ्र मुँह न खोलें।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सत्तारी

ख़ुदा तआला की सत्तारी ऐसी है कि वह इन्सान के गुनाह और भूलों को देखता है लेकिन अपनी इस विशेषता के कारण उस के ग़लत कामों को उस समय तक जब तक कि वह मध्य मार्ग की सीमा से न गुज़र जाएं ढाँपता है परन्तु इन्सान किसी दूसरे की ग़लती देखता भी नहीं और शोर मचाता है। असल बात यह है कि इन्सान कम हौसला है और ख़ुदा तआला की ज़ात सहनशील तथा दयालु है अत्याचारी इन्सान अपने नफ़्स पर ज़ुल्म कर बैठता है और कभी कभी ख़ुदा तआला के दया पर पूरी सूचना न रखने के कारण बेबाक हो जाता है उस वक़्त इंतिक़ाम का गुण काम करता है और फिर उसे पकड़ लेता है। हिन्दू लोग कहा करते हैं कि परमेश्वर ओरात में वीर है। अर्थात ख़ुदा सीमा से बढ़ी हुई बात को प्रिय नहीं रखता। परन्तु इस के बावजूद भी वह ऐसा दयालु तथा कृपालु है कि ऐसी अवस्था में भी यदि इन्सान निहायत विनय तथा विनम्रता के साथ अल्लाह तआला के दरवाज़ा पर जा गिरे तो वह रहम के साथ इस पर नज़र करता है। सार यह है कि जैसे अल्लाह तआला हमारी भूलों पर शीघ्र नज़र नहीं करता और अपनी सत्तारी के कारण अपमानित नहीं करता तो हम को भी चाहिए कि हर ऐसी बात पर जो किसी दूसरे की लज्जा या अपमान पर आधारित हो शीघ्र मुँह न खोलें।

अज्ञानता का ईलाज इस्तिग़फ़ार है

कई लोगों की अवस्था ऐसी होती है कि उनको ऐसे माध्यम मिल जाते जाते हैं जैसे नौकरी या कोई और कारण कि उनकी उम्र का एक बड़ा हिस्सा अन्धकारमय हालत में गुज़रता है। न नमाज़ की पाबंदी तरफ़ ध्यान करते हैं,न अल्लाह तआला की बात की तरफ और और न रसूल की बात को सुनने का अवसर मिलता है। अल्लाह तआला की किताब पर ग़ौर करने का उनको ख़्याल तक भी नहीं आता। ऐसी अवस्था में जब एक ज़माना आन्धकार का गुज़र जाए तो ये विचार दृढ़ हो कर आदत का रंग धारण कर लेते हैं। अत: उस समय यदि इन्सान तौबा और इस्ति-ग़फ़ार की तरफ़ ध्यान न करे तो समझो कि बड़ा ही बदक़िस्मत है। ग़फ़लत और सुस्ती का बेहतरीन ईलाज इस्तिग़फ़ार है। पहले की अज्ञानताओं और सुस्तियों के कारण से कोई परीक्षा भी आ जाए तो रातों को उठ उठकर सज्दे और दुआएं करे और ख़ुदा तआला के समक्ष एक सच्ची और पवित्र तबदीली का वादा करे।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 273 से 274 प्रकाशन कादियान 2018)

इन्सान जो सज़ाएं देते हैं उनका प्रभाव केवल शरीर पर पड़ता है और हृदय को वे डराने करने की ताक़त नहीं रखते लेकिन अल्लाह तआला चूँकि दिलों पर भी क़ाबिज़ है उसक दंड न केवल शरीर पर नाज़िल होती है बल्कि दिलों पर भी और इस तरह दलों को पवित्र किया जाता है

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ

(सूरत यूनुस आयत : 72) की तफ़सीर में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

इस आयत में यह बताया गया है कि कामिल तदबीर किस तरह की जाती है और इसके लिए पाँच तरीक़ बताए। (1) मश्वरा करके एक राय पर जमा हो जाना चाहीए। जब तक कोई क़ौम ऐसा नहीं करेगी वह कभी जीत नहीं सकती। (2) अपने हम-ख़याल लोगों को एक निज़ाम के अधीन ले आना चाहीए। (3) इस राय को पूरा करने के लिए एक तफ़सीली तजवीज़ सोच लेनी चाहीए। या दूसरे लफ़्ज़ों में तफ़सीली नक़्शा तैयार कर लेना चाहीए। (4) बिना परेशानी के ताक़त के एक ही वक़्त में सब ताक़त को ख़र्च करने की कोशिश करना चाहीए ताकि सारी क़ौम का ज़ोर एक ही वक़्त में दुश्मन पर पड़े। (5) हमला करने के बाद दुश्मन को सांस लेने का भी अवसर नहीं देना चाहीए क्योंकि इस सूरत में दुश्मन फिर ताक़त पैदा करलेगा। पहला हमला ख़त्म नहीं होने पाए कि दूसरा शुरू हो जाएगी। समस्त नबी इसी तरीक़ पर कारबन्द होते चले आए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का भी यही तरीक़ था। आप एक विज्ञापन निकालते अभी इस का चर्चा जारी होता कि दूसरा और निकाल देते थे।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-5)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का अख़बार DIE ZEIT को इंटरव्यू

एक महिला प्रोफ़ैसर ने प्रश्न किया कि जर्मनी में आपकी कम्यूनिटी काफ़ी ACTIVE है। अब आपका आगे का क्या प्लान है

एक प्रश्न यह किया गया कि आप का पाकिस्तान वापस जाने का कोई इरादा और प्रोग्राम है आपके लोग देश प्रेमी हैं?

एक प्रोफ़ैसर ने यह प्रश्न किया कि आपकी महिलाए आज़ाद नहीं हैं। डांसिंग के प्रोग्रामों में नहीं जातीं। थेटर में जाने पर पाबंदी है

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

"बैयतुल आफ़ियत"

मज्लिस अन्सारुल्लाह और लजना इमाल्लाह जर्मनी के मर्कज़ी दफ़ातिर के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

तशह्हुद,ताव्वुज़ और तसमीया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

अलहमदु लिल्लाह कि मज्लिस अन्सारुल्लाह जर्मनी और लजना इमाल्लाह जर्मनी को एक बड़ी इमारत अल्लाह तआला ने ख़रीद ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। उस का नाम "बैयतुल आफ़ियत" मैंने इस लिए रखा था कि आज कल उमूमन यह एतराज़ पाया जाता है कि शायद मुस्लमान सांप्रदायिकता की शिक्षा देने वाले हैं और सांप्रदायिकता पर अमल करने वाले हैं। जबकि कि अहमदिया की Image बाकी देशों की तरह जर्मनी में भी बड़ी अच्छी है और लोगों में भी अच्छा तास्सुर क़ायम है और हुकूमत के हलक़ों में भी क़ायम है कि ये अम्न पसंद जमाअत है। लेकिन वैसे भी इसका प्रकटन भी होते रहना चाहीए और ये सदैव का प्रकटन है। दुनिया को पता लगे कि यहां जो इमारत अब जमाअत अहमदिया की ज़ेली तन्ज़ीमों के ज़ेर-ए-इस्तेमाल आने वाली है वह किसी देहश्तगर्दी के मक़ासिद को पूरा करने वाली नहीं बल्कि हमने एक आफ़ियत का हिसार बनने के लिए यहां क़दम रखा है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने यही फ़रमाया था कि आप इस ज़माना में आफ़ियत का हिसार बनने के लिए ही आए हैं। आप अलैहिस्सलाम ने अपनी एक किवता में फ़रमाया कि :

हैं दरिंदे हर तरफ मैं आफ़ियत का हूँ हिसार

तो इस आफ़ियत के हिसार का प्रकटन प्रत्येक जगह प्रत्येक अहमदी से होना चाहीए और अन्सारुल्लाह की आयु एक ऐसी आयु है जिसमें एक बड़ी पुख़्ता सोच बन जाती है और इस सोच के साथ उनको जहां ग़ैरों में इस बात को मज़ीद सुदृढ़ करना है कि जमाअत अहमदिया एक ऐसी जमाअत जो इस्लाम की हक़ीक़ी तस्वीर प्रस्तुत करते हुए प्रेम मुहब्बत और सलामती की न केवल शिक्षा देती है बल्कि संसार को इस में समेटती भी है और अपने प्रत्येक प्रकटन से अपने प्रत्येक अमल से यह जमाअत एक ऐसी पनाह-गाह है जिस में प्रत्येक सुरक्षित है।

अन्सारुल्लाह का एक तो बाहर का प्रकटन है। दूसरे अपने घरों में भी आपकी ऐसी अमली तस्वीर बननी चाहीए और आप के बच्चे और आपकी बीवी आप के घर वाले आप के ख़ानदान वाले इस बात को समझने वाले हों और यक़ीन रखने वाले हों कि हमारे घरों के जो निगरान हैं जिनको अल्लाह तआला ने हमारा निगरान बनाया है यह न केवल हमारी ज़ाहिरी ज़रूरीयात पूरी करने वाले हैं बल्कि प्रत्येक किस्म की आफ़ियत हमें उनसे मिलने वाली है। हमारी भावनाओ का ध्यान रखने वाले हैं। हमारे घरों के सुकून का ध्यान रखने वाले हैं अपने बच्चों की तालीम-ओ-तर्बीयत का ध्यान रखने वाले हैं।

इसी तरह लजना इमाल्लाह है उनको भी याद रखना चाहीए कि कुछ लोगों में एक तास्सुर इन मुल्कों में रहते हुए पैदा हो जाता है कि शायद यह आज़ादी जो है वह ही संसार की तरक़्क़ी का कारण है। ग़लत किस्म की आज़ादी। इस्लाम आज़ादी देता है लेकिन वह आज़ादी जो ख़ुदा तआला के अहकामात के अंदर रहते हुए क़ायम हो और प्रत्येक मेंबर लजना और प्रत्येक लड़की पंद्रह वर्ष की आयु से लजनात की मेंबर बन जाती है। हर लड़की जो लजना में दाख़िल होती है उसको यह एहसास होना चाहीए कि हक़ीक़ी आफ़ियत हक़ीक़ी पनागाह इसी में है कि हम अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल करें न कि लोगों की ज़ाहिरी चका-चौंद और आज़ादी को देख कर उनके पीछे चलने वाले हों।

अत: जब इस इमारत में आप के दफ़ातिर क़ायम हुए हैं यहां जब आप Planing करेंगे। यहां जब आप मीटिंग करेंगे। यहां जब आप मंसूबा बंदी करेंगे तो हमेश ही याद रखें और यहां आने वाली प्रत्येक मेंबर को याद रखना चाहीए और प्रत्येक आने वाले मेंबर को याद रखना चाहीए कि इस ने अपने प्रकटन से अपने हर अमल से इस बात का प्रकटन करना है कि जमाअत अहमदिया के घरों में भी अमन और सुकून है और जमाअत के माहौल में और बाहर भी अमन और सुकून है। और हमने हक़ीक़ी इस्लामी शिक्षा पर अमल करना हैं।

फिर जब भी एक नई इमारत ख़रीदी जाती है अल्लाह तआला के हम शुक्रगुज़ार होते हैं। वहां अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के इल्हाम के प्रकटन को देखते हैं जो अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम फ़रमाया था कि وَسِّعْ مَكَانَكَ कि अपने मकानों को बड़ा करो और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअती ज़रूरीयात बढ़ती जा रही हैं। कहाँ वह क़ादियान था ।कहाँ जर्मनी और संसार के दूसरे देशों हैं जहां हर-रोज़ एक नया रुख मकानियत के बड़े करने का हमें नज़र है।

अत: इस बात को भी याद रखें कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को यह फ़रमाया कि وَسِّعْ مَكَانَكَ तो उस समय कोई सुविधाएँ नहीं थी। लेकिन यह केवल इरशाद नहीं था यह केवल हुक्म नहीं था बल्कि एक भविष्यवाणी भी थी कि तुम्हें इस हालत में कि जबकि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है और वह हालत यह थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि मुझे इल्हाम हुआ وَسِّعْ مَكَانَكَ और मेरे पास मकानियत की वुसअत के लिए कोई रक़म नहीं। पाँच रुपय देकर एक व्यक्ति को भेजा कि बटाला जाओ कुछ लकड़ी, पछयां और काने ले आओ ताकि अल्लाह तआला के इल्हाम को पूरा करने के लिए एक छप्पर डाल दें।

आज इस छप्पर का संसार के 206 देशों में फैलाओ हो चुका है। और वह छप्पर-छप्पर नहीं रहा बल्कि कंक्रीट की मज़बूत इमारतें बन चुकी हैं। अत: यह अल्लाह तआला का केवल एक हुक्म नहीं था बल्कि एक भविष्यवाणी थी जो प्रत्येक नई इमारत में हम पूरा होते हुए देखते हैं। अत: इस लिहाज़ से भी हमें शुक्रगुज़ार होना चाहीए कि अल्लाह तआला जमाअत को जिस तरह लोग में वुसअत अता फ़र्मा रहा है इसी तरह अपने वादों के अनुसार मकानियत में वुसअत अता फ़र्मा रहा है। लेकिन यह भी याद रखें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के आने का एक उद्देश्य रूहानियत में तरक़्क़ी भी था। इस में भी प्रत्येक लजना मेंबर को प्रत्येक नासिर को प्रत्येक ख़ादिम को प्रत्येक जमाअत के व्यक्ति को वुसअत पैदा करने की आवश्यकता है। अपनी रूहानियत को बढ़ाने की आवश्यकता है अपने सम्बन्ध को अल्लाह तआला से पहले से ज़्यादा बढ़ाने की आवश्यकता है। तब ही हम हक़ीक़ी रंग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के आने के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे। और जहां तक अन्सारुल्लाह का प्रश्न है तभी वह इस बात के हक़दार होंगे कि कह सकें हम अन्सारुल्लाह हैं।और तब ही लजना इमाल्लाह यह कहने की हक़दार होगी कि हम लजना इमाल्लाह हैं, अल्लाह तआला की लौंडियां हैं। इसके आदेशों पर अमल करने वाली हैं और उसके संदेश को संसार में पहुंचाने वाले हैं।

अल्लाह तआला आप सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि जो महान उद्देश्य जमाअत के सामने हैं उनको हम प्रत्येक रंग में हमेशा फैलाते चले जाएं और जो अल्लाह तआला हमें इनामात से नवाज़ रहा है उनका सही हक़ अदा करते हुए शुक्रगुज़ार बनते चले जाएं। अब दुआ कर लें।

भाषण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला

शेष पृष्ठ 10 पर

''हे उस्मान हो सकता है कि अल्लाह तआला तुझे एक क़मीज़ पहनाए, यदि लोग तुझ से उस क़मीज़ को उतारने की मांग करें तो तू उनके कहने पर उसे कदापि न उतारना।'' (हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा र्राशिद ज़ूनुरैन हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु तो वह इन्सान थे जिन के सम्बन्ध में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उन्होंने इस्लाम की इतनी ख़िदमात की हैं कि वह अब जो चाहें करें ख़ुदा उनको नहीं पूछेगा उनमें इतनी खूबियां पैदा हो गई थीं और वह नेकी में इस क़दर तरक़्क़ी कर गए थे कि यह संभव ही नहीं रहा था कि उनका कोई कर्म अल्लाह तआला के आदेशों के विरुद्ध हो

चार मरहूमीन श्रीमान अब्दुल क़ादिर साहिब (शहीद बाज़ीद ख़ैल पिशावर, श्रीमान अकबर अली साहिब असीराने राह-ए-मौला आफ़ शौकत कॉलोनी ज़िला ननकाना साहिब), श्रीमान ख़ालिद मेहमूदुल हसन भट्टी साहिब तीसरे वकीलुल माल तहरीक जदीद रब्वा और श्रीमान मुबारक अहमद ताहिर साहिब मुशीर क़ानूनी सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 फ़रवरी 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने के ग़ज़वात और विजयों का वर्णन चल रहा था। आज वही वर्णन करूँगा। अली बिन मुहम्मद मदायनी वर्णन करते हैं कि तिब्रिस्तान पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने 30 हिज्री में हमला किया, वहां लड़ाई हुई और क़िला फ़तह किया। (इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 102-103, सन 30 हिज्री दारुल फ़िकर 1998 ई.)

इसी तरह फ़तह अलस्वारी 31 हिज्री में है इसके बारे में आता है कि अधिकतर इतिहास की पुस्तकों में इस मार्के का स्थान निर्धारित नहीं किया गया है। अल्लामा इब्ने खुल्दून ने इस मार्के का स्थान सिकंदरया लिखा है। (इतिहास इब्ने खुल्दून भाग 2 पृष्ठ 575 विलायत अब्दुल्लाह बिन अबी सरा अली मिस्र और फ़तह अफ्रीका। दारुल फ़िकर बेरूत 2000 ई.) (अल्नजूम फिल्ज़ोहरा फ़ी मुलूक मिस्र-और-काहिरा , भाग 1 पृष्ठ 80 वर्णन वलायत इब्न अबी सरा अली मिस्र। दारुल कुतुब मिस्री 1929 ई.)

एक कथन के अनुसार 31 हिज्री में मुस्लमानों ने अहल-ए-रुम के साथ एक युद्ध लड़ा जिसे अलस्वारी कहा जाता है। अबू मशअर की रिवायत के अनुसार अलस्वारी का युद्ध 34 हिज्री में हुआ और असावेदाह का समुद्री युद्ध 31 हिज्री में हुआ। वाक़दी के अनुसार अलस्वारी का युद्ध और असावेदाह का युद्ध दोनों 31 हिज्री में हुए।

(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 115 अलस्वारी का युद्ध, सन 31 हिज्री, दारुल फ़िकर 1998 ई.)

जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन साअद बिन अबी सरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़िरंगियों अर्थात फ्रैंच और बरबरियों को अफ़रीका और अंदलुस में पराजय दी तो रूमी बड़े भड़के और सब मिल कर कुस्तुन्तुनिया बिन हरकल के पास जमा हुए और मुस्लमानों के मुक़ाबले में ऐसी फ़ौज लेकर निकले जिस की इस्लाम के आरम्भ से अब तक कोई उदाहरण नहीं देखी गई थी। यह लश्कर पाँच सौ समुद्री जहाज़ों पर आधारित था जो मुस्लमानों से मुक़ाबले के लिए निकला। अमीर मुआवीया ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन साअद बिन अबी सरा को समुद्री बेड़े का अमीर निर्धारित किया। जब दोनों लश्कर आमने-सामने हुए तो सख़्त मुक़ाबला हुआ। अंततः अल्लाह तआला की नुसरत से मुस्लमानों को फ़त्हा प्राप्त हुई और कुस्तुन्तुनिया और इसका बचा कुचा लश्कर भाग खड़ा हुआ। (उद्धरित तारीख तिब्री भाग 5 पृष्ठ 116 दारुल फ़िकर 1998 ई.)(उद्धरित अज़ बिदाया व्नाहाया इब्ने कसीर भाग 7 पृष्ठ 152-153 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2001ई.)

फ़तह अर्मीनिया 31 हिज्री में हुई। वाक़दी के कथन के अनुसार 31 हिज्री में हबीब बिन मसलम फैहरी के हाथ पर अर्मीनिया फ़तह हुआ।

(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 118 दारुल फ़िकर 1998 ई.)

फ़तह ख़ुरसान 31 हिज्री में हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर ख़ुरासन् की तरफ़ रवाना हुए और उन्होंने अब (abarshahr) तूओस (tous) अबीवर् (abi-vard) और निसा (nesa) को फ़तह कर लिया यहां तक कि वह सरख (sarakhs) पहुंच गए। मरवा वालों (merv) ने भी इसी वर्ष सुलह कर ली।

(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 123 श्खूस अब्दुल्लाह बिन आमिर अली खुरासान-वा-मा काम बिमन फ़ुतूह। दारुल फ़िकर 1998 ई.)

यह मरोतर कमानिस्तान में है। अन्य क्षेत्र ईरान के हैं। बिलाद-ए-रुम की तरफ़ पेशक़दमी 32 हिज्री में हुई। 32 हिज्री में अमीर मुआवीया ने बिलाद-ए-रुम से युद्ध किया यहाँ तक कि वे क़ुस्तुनतुनिया के दरवाज़े पर जा पहुंचे।

(बिदाया व्नाहाया इब्ने कसीर भाग 7 पृष्ठ 155 दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत लुबनान 2001 ई.)

मरुरूज़, तलाकान, फरेयाब (faryab) जूओ (jowz) और तखारिस्तान (takhar) की विजय 32 हिज्री की हैं। 32 हिज्री में हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर ने मरुरूज़, तलाकान वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान में बलख़ और मरुरूज़, के मध्य इलाक़ा है, फ़ारियाब और जोज़ाजान से यह भी अफ़ग़ानिस्तान का इलाक़ा है। जोज़ाजान, यह भी अफ़ग़ानिस्तान का इलाक़ा है। त्रिखस्तान, यह भी अफ़ग़ानिस्तान का इलाक़ा है, ये सब क्षेत्र फ़तह किए। (इतिहास अल्तिबरी भाग 2 पृष्ठ 630 फ़तह मर्वारोज़ोकिस्तान अलफ़ारियाब-और -जूजान और तखारिस्तान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.) (सैर सहाबा भाग प्रथम पृष्ठ 168 दारुल इशात कराची 2004 ई.)

अबू अल् अशअब साअदी अपने पिता से रिवायत करते हैं कि अहनफ़ बिन कैस की म्रूरूज़ वालों, तलाकान फरेयाब और जू ज़ाजान यह रात के अंधेरे तक युद्ध जारी रहा यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने दुश्मन को पराजय से दो-चार किया।

(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 130 फ़तह मर्ववाज़ और तालेकान और फरेयाब-और-अल्जूज़ जान-और-तख़ारिस्तान, दारुल फ़िकर 1998 ई.)

अन्हफ़ बिन कैस ने अक्राह बिन हांबिस को एक घुड़सवार लश्कर के साथ जूज़ाजान की ओर रवाना किया। अकराह को इस बचे कुचे लश्कर की ओर भेजा गया था जिसे आहनफ़ पराजय दे चुका था। इसलिए अक्राह बिन हाबिस ने उनसे सख़्त युद्ध किया जिसमें उनके शह-सवार शहीद भी हुए जबकि अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को फ़तह प्रदान की।

(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 130- 131 फ़तह मर्वारूज़ो वाल्तिल्कान वल्फारियाब जूजान और तखारिस्तान, दारुल फ़िकर 1998 ई.)

बल्ख की फ़तह 32 हिज्री में हुई। अहनफ़ बिन क़ैस मर्वारूज़ो से बल्ख की तरफ़ गए और वहां जा कर अहल-ए-बल्ख का घेराव कर लिया। पुराना बल ख़ुरासान का एक महत्त्वपूर्ण शहर था और यह मौजूदा अफ़ग़ानिस्तान का सबसे पुराना शहर है। आज कल पुराना शहर खन्डर की शक्ल में मौजूद है। बलख़ दरिया के दाएं किनारे से 12 किल्लोमीटर दूर स्थित है। वहां के लोगों ने चार लाख की रक़म अदा करने पर सुलह का निवेदन किया जो अहनफ़ बिन कैस ने क़बूल कर

लिया। (इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 131 वर्णन सुलह अलअहनफ़ बलख़ वालों के साथ, दारुल फ़िकर 1998 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान भाग प्रथम पृष्ठ 568 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हरात की मुहिम 32 हिज्री में हुई। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने खुलैद बिन अब्दुल्लाह बिन हनफ़ी को हारात बज़ागीज़ की ओर रवाना किया उन्होंने उन दोनों को फ़तह कर लिया लेकिन बाद में उन्होंने बग़ावत कर दी और कारिन बादशाह के साथ हो गए।

(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 131 वर्णन सुलह अल्हनफ़ बलख़ वालों के साथ, दारुल फ़िकर 1998 ई.)

32 हिज्री में हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर ने खुरासान पर कैस बिन हाशिम है को अपना जांनशीन निर्धारित किया और स्वयं वहां से रवाना हो गए।
(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 132 वर्णन सुलह हनफ़ बलख़ वालों के साथ, दारुल फ़िकर 1998 ई.)

कारिन् ने मुस्लमानों के लिए एक बड़ी फ़ौज तैयार कर रखी थी। क़ैस बिन हाशिम ईमारत बदुल्लाह बिन खाज़िम के हवाले करके हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर के पास मदद और कमक के लिए चले गए।

(इतिहास अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 132-133 वर्णन सुलह हनफ़ बलख़ वालों के साथ, दारुल फ़िकर 1998 ई.)

क्योंकि फ़ौज काफ़ी थी जिसका मुक़ाबला था। अब्दुल्लाह बिन खाज़िम चार हज़ार की फ़ौज लेकर कारिन् के साथ युद्ध करने के लिए रवाना हुए। अब्दुल्लाह बिन खाज़िम ने छः सौ सिपाहीयों को हर प्रथम दस्ते के तौर पर आगे भेजा और उनके पीछे रवाना हुए। वह हर प्रथम दस्ता आधी रात को कारिन के लश्कर तक पहुंच गया और उन पर हमला कर दिया। इस अचानक हमले से दुश्मन भयभीत हो गया और जब मुस्लमानों की अन्य फ़ौज पहुंची तो दुश्मन की बुरी तरह पराजय हुई और क़ारिन क़तल हुआ। मुस्लमानों ने पीछा किया और बहुत से लोगों को क़तल और गिरफ़्तार कर के क़ैदी बना लिया। (इतिहास भाग 5 पृष्ठ 132 वर्णन सुलह हनफ़ बलख़ वालों के साथ, दारुल फ़िकर 1998 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में बर्र-ए-सग़ीर (पाकिस्तान-और-हिंदूस्तान की सरज़मीन) में इस्लाम पहुंच गया। इमाम अबू यूसुफ़ पुस्तक अलख़राज में इमाम ज़ोहरी के हवाले से लिखते हैं कि मिस्र और शाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में फ़तह हुए और अफ़्रीका और खुरासान और सिंध का कुछ इलाक़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में फ़तह हुआ।

(पुस्तक अलख़राज अज़ इमाम अबू यूसुफ़ पृष्ठ 218 फ़सल फ़ी क़िताल अहले शिर्क व अहले बग़ी-व्-कैफ़ा यदउन, अल्मक्ताबा तोफीकिया 2013 ई.)

बर्र-ए-सग़ीर (पाकिस्तान और हिंदूस्तान की सरज़मीन) में इस्लाम की आमद के संबंध में एक रिवायत इस प्रकार मिलती है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में हज़रत अबैदुल्लाह बिन मोअमर को फ़ौज का एक दस्ता देकर मकरान और सिंध की तरफ़ भेजा गया। मकरान की विजय में उन्होंने ख़ूब बहादुरी की प्रतिभा दिखाई। इसके बाद इस नवाह के जीते गए इलाक़ों की इमारत उनके सपुर्द हुई।

(बर्र-ए-सग़ीर में इस्लाम के पहले नुक़ूश, मुहम्मद भट्टी पृष्ठ 63 नवंबर 2009 ई.)

हज़रत मुजाशी बिन मसऊद सुलम्मी के सम्बन्ध में लिखा है कि हज़रत मुजाशी ने मौजूदा अफ़्ग़ानिस्तान की राजधानी काबुल में इस्लामी फ़ौज के एक दस्ते की कमान करते हुए मुख़ालिफ़ीन-ए-इस्लाम से जिहाद किया। इतिहासकारों के निकट उस ज़माने में काबुल का शुमार हिंदुस्तान के देश में होता था। हज़रत मुजाशी ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के खिलाफ़त के समय में पाकिस्तान के प्रान्त बलोचिस्तान में मुख़ालिफ़ीन-ए-इस्लाम से युद्ध किया और इससे जुड़े क्षेत्र सजिस्तान पर झंडा लहराया। इसके बाद मुस्लमानों ने बर्र-ए-सग़ीर के इन इलाक़ों में रहने लगे और इसे अपना वतन क़रार दे दिया था। (बर्र-ए-सग़ीर में इस्लाम के प्रथम नुक़ूश, मुहम्मद भट्टी, पृष्ठ 65 नवंबर 2009 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में उपद्रव के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पीशगोईयां भी हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे उस्मान हो सकता है कि अल्लाह तआला तुझे एक क़मीज़ पहनाए। यदि लोग तुझ से उस क़मीज़ को उतारने की मांग करें तो तू उनके कहने पर उसे कदापि न उतारना। यह तिरमिज़ी की रिवायत है।

(सुंन अलतिरमिज़ी अबवाब मुनाकिब बाब المناقب باب منع النبيﷺ عثمان ان لا يخلع... ,हदीस नंबर 3705)

सुंन इब्ने माजा में यह रिवायत इस तरह है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे उस्मान यदि अल्लाह तआला किसी दिन यह कार्य तुम्हारे सपुर्द कर दे और मुनाफ़िक़ तुम से चाहें कि तुम अपनी क़मीज़ को जो अल्लाह ने तुम्हें पहनाई है उतार दो तो तुम उसे न उतारना। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह तीन दफ़ा फ़रमाया। रावी नोमान कहते हैं कि मैंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हा को किस बात ने मना किया था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हा लोगों को इस से अवगत करें? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया मुझे यह बात भुला दी गई थी।

(सुंन इब्ने माजा इफ़्तिताह किताब ..... फ़ज़ल उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस नंबर 112)

हज़रत काब बिन उजराह ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक उपद्रव का वर्णन फ़रमाया और उसे क़रीब बताया तो एक व्यक्ति गुज़रा। जब वर्णन फ़र्मा रहे थे तो वहां से एक व्यक्ति गुज़रा जिसने सिर ढाँपा हुआ था, चादर ओढ़ी हुई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह व्यक्ति उस दिन हिदायत पर होगा जब यह उपद्रव होगा। तो रावी कहते हैं कि मैंने छलांग लगाई और मैंने उस व्यक्ति को पकड़ा तो वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उनको दोनों बाज़ुओं से पकड़ा। फिर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ रुख किया और अर्ज़ किया -क्या यह? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ यही। (सुंन इब्ने माजा इफ़्तिताह किताब ..... फ़ज़ल उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हा हदीस नंबर 111)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी बीमारी के मध्य फ़रमाया कि मैं चाहता हूँ कि मेरे पास कुछ सहाबा हों। हमने अर्ज़ क्या या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम !क्या हम आपकी ख़िदमत में अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु को न बुला लें? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश रहे। फिर हमने कहा क्या हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को न बुला लें? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश रहे। फिर हमने कहा क्या हम आपकी ख़िदमत में उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को न बुला लें? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। वह आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे तन्हाई में मिले और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे बात चीत फ़रमाने लगे और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे का रंग बदल रहा था। क़ैस कहते हैं मुझ से अबू साहले जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए गए ग़ुलाम थे उन्होंने वर्णन किया कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु अद्दार के दिन के अवसर पर वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे एक ताकीदी इरशाद फ़रमाया था और मैं उस की तरफ़ जा रहा हूँ। रावी वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया।اَنَا صَابِرٌ عَلَيْهِ मैं इस पर मज़बूती से क़ायम हूँ।

अद्दार का दिन उस दिन को कहा जाता है जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मुनाफ़िक़ों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में कैद कर दिया था और फिर इंतिहाई बेदर्दी से शहीद कर दिया।

(सुंन इब्ने माजा इफ़्तिताह किताब ... फ़ज़ल उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस नंबर 113 हाशिये के साथ)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के खिलाफ़त के समय में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़ और इसके कारणों के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़ी तफ़सील से वर्णन फ़रमाया है। आप फ़रमाते हैं :

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु "ये दोनों बुज़ुर्ग इस्लाम के प्रथम क़ुर्बानी देने वालो में से हैं और उनके साथी भी इस्लाम के बेहतरीन समरात में से हैं। उनकी दियानत और उनके तक़्वा पर आरोप का आना वास्तव में इस्लाम की ओर बदनामी का मंसूब होना है। और जो मुस्लमान भी सच्चे दिल से इस हक़ीक़त पर ग़ौर करेगा उसको इस नतीजे पर पहुंचना पड़ेगा कि उन लोगों का वजूद वास्तव में समस्त प्रकार की धड़े बंदीयों से ऊँचा और बड़ा है और यह बात बिना तर्क के नहीं बल्कि इतिहास के औराक़ उस व्यक्ति के लिए

जो आँख खोल कर उन पर नज़र डालता है इस अमर पर शाहिद हैं। जहां तक मेरी तहक़ीक़ है इन बुज़ुर्गों और उनके दोस्तों से सम्बंधित जो कुछ वर्णन किया जाता है वे इस्लाम के दुश्मनों की कार्रवाई है और जबकि साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो के बाद कुछ मुस्लमान कहलाने वालों ने भी अपनी नफ़सानियत के अंतर्गत इन बुज़ुर्गों में से एक या दूसरे पर आरोप लगाए हैं लेकिन बावजूद इसके सच्चाई हमेशा बुलंद-ओ-बाला रही है और हक़ीक़त कभी पर्दे के नीचे नहीं छुपी।" (इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 249)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विरुद्ध जो उपद्रव उठा था उसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि " सवाल यह है कि यह उपद्रव कहाँ से पैदा हुआ? इसका कारण कुछ लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़रार दिया है और कुछ ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को। कुछ कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ बिद्दतें शुरू कर दी थीं जिनसे मुस्लमानों में जोश पैदा हो गया और कुछ कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खिलाफ़त के लिए गुप्त प्रयास शुरू कर दिए थे और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विरुद्ध मुख़ालिफ़त पैदा करके उन्हें क़तल करा दिया ताकि स्वयं ख़लीफ़ा बन जाएं।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "लेकिन ये दोनों बातें ग़लत हैं। न हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कोई बिद्दत जारी की और न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्वयं ख़लीफ़ा बनने के लिए उन्हें क़तल करवाया या उनके क़तल की योजना में शरीक हुए बल्कि इस उपद्रव के और ही कारण थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का दामन इस प्रकार के आरोपों से बिल्कुल पवित्र है। वह अत्याधिक मुक़द्दस इन्सान थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु तो वह इन्सान थे जिनके सम्बन्ध में हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उन्होंने इस्लाम की इतनी ख़िदमात की हैं कि वह अब जो चाहें करें ख़ुदा उनको नहीं पूछेगा यह तिरमिज़ी की रिवायत है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "इस का यह अर्थ नहीं था कि चाहे वह इस्लाम से ही अलग हो जाएं तो भी पकड़ नहीं होगा बल्कि यह था" अर्थ इसका "कि उनमें इतनी खूबियां पैदा हो गई थीं और वह नेकी में इस क़दर तरक़्क़ी कर गए थे कि यह संभव ही नहीं था कि उनका कोई कार्य अल्लाह तआला के आदेशों के विरुद्ध हो। अत: हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे इन्सान नहीं थे कि वह कोई शरीयत के विरुद्ध बात जारी करते और न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे इन्सान थे कि खिलाफ़त के लिए गुप्त मंसूबे करते।"

(इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 253-254)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के खिलाफ़त के आरंभ में छ: वर्ष तक हमें कोई उपद्रव नज़र नहीं आता बल्कि मालूम होता है कि लोग आम तौर पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ुश थे बल्कि इतिहास से मालूम होता है कि उस समय में वे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ज़्यादा लोगों को महबूब थे''अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ज़्यादा लोगों को महबूब थे'' केवल महबूब ही नहीं थे बल्कि लोगों के दिलों में आप रज़ियल्लाहु अन्हु का भय भी था जैसा कि उस वक़्त का कवि इस बात की कविताओं में गवाही देता है और कहता है कि उपद्रवियों! उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हुकूमत में लोगों का माल लूट कर न खाओ क्योंकि इब्ने अफ्फ़ान वह है जिस का तजुर्बा तुम लोग कर चुके हो। वह लुटेरों को क़ुरआन के आदेशों के अंतर्गत क़तल करता है और हमेशा से इस क़ुरआन-ए-करीम के आदेशों की हिफ़ाज़त करने वाला और लोगों के आज़ा-और-जवारेह पर उसके आदेश जारी करने वाला है। लेकिन छ: वर्ष के बाद सातवें वर्ष हमें एक तहरीक नज़र आती है और वह तहरीक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विरुद्ध नहीं बल्कि या तो साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो के विरुद्ध है या कुछ गवर्नरों के विरुद्ध। इसलिए तिबरी वर्णन करता है कि लोगों के हुक़ूक़ का हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पूरा ख़्याल रखते थे परन्तु वे लोग जिनको इस्लाम में सबक़त और क़दामत प्राप्त नहीं थी वे साबक़ीन और क़दीम मुस्लमानों के बराबर न तो मजालिस में सम्मान पाते और न हुकूमत में उनको उनके बराबर हिस्सा मिलता और न माल में उनके बराबर उनका हक़ होता था। इस पर कुछ मुद्दत के बाद कुछ लोग इस तफ़ज़ील पर गिरिफ़त करने लगे और उसे ज़ुलम क़रार देने लगे परन्तु ये लोग आम मुसलमानों से डरते भी थे और इस ख़ौफ़ से कि लोग उनकी मुख़ालिफ़त करेंगे अपने विचार को ज़ाहिर नहीं करते थे बल्कि उन्होंने यह तरीक़ इख़तियार किया हुआ था कि छुप छुप कर साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो के विरुद्ध लोगों में जोश फैलाते थे और जब कोई अज्ञान मुस्लमान या कोई बदवी ग़ुलाम आज़ाद शूदा मिल जाता तो उसके सामने अपनी शिकायातों का दफ़्तर खोल बैठते थे और अपनी अज्ञानता की वजह से या स्वयं अपने लिए पद की प्रप्ति के लिए कुछ लोग उनके साथ मिल जाते। होते होते ये गिरोह संख्या में ज़्यादा होने लगा और इसकी एक बड़ी संख्या हो गई।'' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "जब कोई उपद्रव पैदा होना होता है तो उस के कारण भी ग़ैरमामूली तौर पर जमा होने लगते हैं। उधर तो कुछ हसद करने वालों में साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो के विरुद्ध जोश पैदा होना शुरू हुआ उधर वे इस्लामी जोश जो आरंभ में हर एक मज़हब तबदील करने वाले के दिल में होता है इन नए मुसलमानों के दिलों से कम होने लगा जिनको न रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत मिली थी और न आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सोहबत याफताह लोगों के पास ज़्यादा बैठने का अवसर मिला था बल्कि इस्लाम के क़बूल करते ही उन्होंने ख़्याल कर लिया था कि वह सब कुछ सीख गए हैं। जोश-ए-इस्लाम के कम होते ही वह तसर्रुफ़ जो उनके दिलों पर इस्लाम को था कम हो गया और वह फिर इन मआसी में ख़ुशी महसूस करने लगे जिसमें वह इस्लाम लाने से पहले ग्रस्त थे। उनके अपराधों पर उनको सज़ा मिली तो अतिरिक्त इस्लाह के सज़ा देने वालों की विध्वंसकारी हुए और आख़िर इस्लाम की एकता में एक बहुत बड़ा रौक पैदा करने का कारण साबित हुए। इन लोगों का केंद्र तो कूफ़ा में था परन्तु सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात यह है कि स्वयं मदीना मुनव्वरा में एक ऐसी घटना हुई जिससे मालूम होता है कि उस वक़्त कुछ लोग इस्लाम से ऐसे ही अनभिज्ञ थे जैसे कि आजकल कुछ अत्याधिक अंधकार के एकान्त स्थान में रहने वाले जाहिल लोग।

हुमरान इब्ने आबान एक व्यक्ति था जिसने एक औरत से उसकी इद्दत के मध्य में ही निकाह कर लिया। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को इस का इलम हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु इस पर नाराज़ हुए और उस औरत को इससे जुदा कर दिया और इसके अतिरिक्त उसको मदीना से" उस व्यक्ति को मदीना से'' निकाल कर बस्रा भेज दिया। इस घटना से मालूम होता है कि किस तरह कुछ लोग केवल इस्लाम को क़बूल करके अपने आप को इस्लाम का विद्वान समझने लगे थे और ज़्यादा तहक़ीक़ की ज़रूरत नहीं समझते थे या ये कि विभिन्न अवैध को वैध समझने के विचार के अंतर्गत शरीयत पर अमल करना एक व्यर्थ कार्य ख़्याल करते थे।''

(इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 262-263)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हक़ यही है कि यह सब विद्रोह एक गुप्त योजना का परिणाम था जिसके असल बानी यहूदी थे जिनके साथ दुनियावी लालच में ग्रस्त कुछ मुस्लमान जो दीन से निकल चुके थे शामिल हो गए थे अन्यथा शहर के आलिमों का न कोई क़सूर था न वे इस उपद्रव के कारण थे।'' कुछ यहूदी इसके संस्थापक थे और उनके साथ कुछ मुस्लमान भी मिल गए थे। बहरहाल जो विभिन्न उमरा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से निर्धारित किए गए थे उनका कोई क़सूर नहीं था न ही वे इस उपद्रव का कारण बने थे। "उनका केवल इसी क़दर क़सूर था कि उनको हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस काम के लिए निर्धारित किया था और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का यह क़सूर था कि बावजूद वृद्धा-वस्था और शारीरिक दुर्बलता के इस्लाम की इत्तिहाद की रस्सी को अपने हाथों में पकड़े बैठे थे और उम्मते इस्लामिया का बोझ अपनी गर्दन पर उठाए हुए थे और शरीअत-ए-इस्लाम के क़ियाम की फ़िक्र रखते थे और धर्म से विमुखता करने वाले और ज़ालिमों को अपनी इच्छा अनुसार कमज़ोरों और बे वारिसों पर ज़ुल्म और अत्याचार करने नहीं देते थे। इसलिए इस बात की तसदीक़ इस घटना से भी होती है कि कूफ़ा में इन्ही उपद्रव चाहने वालों की एक मज्लिस बैठी और इस में उपद्रव और मुसलमानों के मामलात पर बात चीत हुई तो सब लोगों ने बिलइत्तिफ़ाक़ यही राय दी। لَاوَاللّٰہِ لَا یَرۡ فَعُ رَأۡسٌ مَا دَامَ عُثۡمَانُ عَلَی النَّاسِ अर्थात कोई व्यक्ति उस वक़्त तक सिर नहीं उठा सकता जब तक कि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हुकूमत है। उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ही का एक वजूद था जो उद्दण्ता से रोके रखे हुए था। इस का मध्य से हटाना आज़ादी से अपनी मुरादें पूरी करने के लिए ज़रूरी था।"

(इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 282-283)

इस उपद्रव का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मज़ीद वर्णन फ़रमाते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन उपद्रवियों को भी बुलवाया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा को भी जमा किया। जब सब लोग जमा हो गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों का सब हाल सुनाया और वह दोनों मुख़्बिर भी बतौर गवाह खड़े हुए और गवाही दी जिन्हों ने ख़बरें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंचाई थीं कि उपद्रवियों क्या उपद्रव फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। इस पर सब सहाबा ने फ़तवा दिया कि उन लोगों को क़तल कर दिया जाए। ये जो उपद्रवियों हैं जो इस्लाह के नाम पर उपद्रव फैला रहे हैं उनको क़तल कर दें क्योंकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो व्यक्ति ऐसे वक़्त में कि एक इमाम मौजूद हो अपनी इताअत या किसी और की इताअत के लिए लोगों को बुलाएँ उस पर ख़ुदा की लानत हो। तुम ऐसे व्यक्ति को क़तल कर दो ख़ाह कोई हो। यह मुस्लिम की रिवायत है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह कथन याद दिलाया कि मैं तुम्हारे लिए किसी ऐसे व्यक्ति का क़तल जायज़ नहीं समझता जिस में मैं शरीक न हूँ। अर्थात अतिरिक्त हुकूमत के इशारे को कि किसी व्यक्ति का क़तल जायज़ नहीं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा का यह फ़तवा सुनकर फ़रमाया कि नहीं। हम उन को माफ़ करेंगे और उनके बहानों को क़बूल करेंगे और अपने सारे प्रयासों से उनको समझावेंगे और किसी व्यक्ति की मुख़ालिफ़त नहीं करेंगे जब तक कि वे किसी हद्द-ए-शरियत को न तोड़े या इज़हारे कुफ़्र न करे। फिर फ़रमाया कि इन लोगों ने कुछ बातें वर्णन की हैं जो तुम को भी मालूम हैं परन्तु उनका ख़्याल है कि वे इन बातों के सम्बन्ध में मुझसे बेहस करेंगे ताकि वापस जा कर कह सकें कि हमने इन विषयों से सम्बंधित उस्मान से बेहस की और वह हार गए। ये लोग कहते हैं कि उसने यात्रा में अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कहते हैं कि उसने यात्रा में पूरी नमाज़ अदा की। एक यात्रा के मध्य में मक्का में पूरी नमाज़ अदा की हालाँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यात्रा में नमाज़ कसर (छोटी) किया करते थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं परन्तु मैंने केवल मिना में पूरी नमाज़ पढ़ी है और वह भी दो कारणों से। एक तो यह कि मेरी वहां जायदाद थी और मैंने वहां शादी की हुई थी। दूसरा यह कि मुझे मालूम हुआ था कि चारों तरफ़ से लोग इन दिनों हज के लिए आए हैं। उनमें से अज्ञान लोग कहने लगेंगे कि ख़लीफ़ा तो दो रकात पढ़ता है और इसलिए नमाज़ दो रकात ही होगी। क्या यह बात दरुस्त नहीं? हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो से पूछा क्या यह बात दरुस्त नहीं? साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने जवाब दिया कि हाँ दरुस्त है। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया : दूसरा आरोप यह लगाते हैं कि मैंने रख निर्धारित करने की बिद्दत जारी की है हालाँकि यह आरोप ग़लत है। रख मुझसे पहले निर्धारित की गई थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसका प्रारम्भ किया था और मैंने केवल सदक़ा के ऊंटों की ज़्यादती पर इस को वसीअ किया था। जो सरकारी चरागाह थी जहां जानवर रखे जाते थे उसको वसीअ किया था और फिर रख में जो ज़मीन लगाई गई है वह किसी का माल नहीं है। यह सरकारी ज़मीन थी और मेरा इस में कोई फ़ायदा भी नहीं है। मेरे तो केवल दो ऊंट हैं हालाँकि जब मैं ख़लीफ़ा बना था उस समय में सब अरब से ज़्यादा मालदार था। तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा उस वक़्त मेरे पास केवल दो ऊंट हैं और मैं सबसे ज़्यादा मालदार था जब ख़लीफ़ा मुंतख़ब हुआ था। अब केवल दौ ऊंट हैं जो हज के लिए रखे हुए हैं। क्या यह दरुस्त नहीं है? साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया कि हाँ दरुस्त है। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यह कहते हैं कि नौजवानों को हाकिम बनाता है हालाँकि में ऐसे ही लोगों को हाकिम बनाता हूँ जो नेक सिफ़ात, नेक व्यवहार करते हैं और मुझसे पहले बुज़ुर्गों ने मेरे निर्धारित किए वालियों से ज़्यादा नौ उम्र लोगों को हाकिम निर्धारित किया था और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उसामा बिन ज़ैद के सरदार लश्कर निर्धारित करने पर इस से ज़्यादा आरोप किए गए थे जो अब मुझ पर किए जाते हैं। क्या यह दरुस्त नहीं? साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने अर्ज़ किया कि हाँ दरुस्त है। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि ये लोगों के सामने बुराइयाँ तो वर्णन करते हैं परन्तु असल घटनाएँ नहीं वर्णन करते। ग़रज़ इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने समस्त आरोपों का एक-एक करके वर्णन किया और उनके जवाब वर्णन किए। साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो बराबर ज़ोर देते कि इन उपद्रवियों को क़तल कर दिया जाए परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी यह बात नहीं मानी और उनको छोड़ दिया। तिबरी कहता है कि اَبَی الْمُسْلِمُوْنَ اِلَّا قَتْلَهُمْ وَ اَبٰی اِلَّا تَرْکَهُمْ अर्थात अन्य सब मुस्लमान तो उन लोगों के क़तल के अतिरिक्त किसी बात पर राज़ी नहीं होते थे परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु सज़ा देने पर किसी तरह राज़ी नहीं होते थे।

इस घटना से मालूम होता है कि मुफ़सिद लोग किस-किस प्रकार के छल और छल से काम करते थे और इस ज़माने में जबकि प्रैस और यात्रा की सामग्री की वह व्यवस्था नहीं थी जो आजकल है। कैसा आसान था कि ये लोग अज्ञान लोगों को गुमराह कर दें। असल में इन लोगों के पास कोई उचित कारण उपद्रव का नहीं था। न हक़ उनके साथ था न यह हक़ के साथ थे। उनकी समस्त कार्यवाईयों का दार-ओ-मदार झूठ और बातिल पर था और केवल हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का रहम उनको बचाए हुए था अन्यथा मुस्लमान उनको टुकड़े-टुकड़े कर देते। वे अर्थात साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे और जो पुराने मुस्लमान थे ये बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि वे अमन-ओ-अमान जो उन्होंने अपनी जानें क़ुर्बान करके प्राप्त किया था चंद शरीरों की शरारतों से इस तरह जाता रहे और वे देखते थे कि ऐसे लोगों को जल्द सज़ा नहीं दी गई तो इस्लामी हुकूमत ते-और-बाला हो जाएगी परन्तु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पूर्णता रहम थे। वह चाहते थे कि जिस तरह हो उन लोगों को हिदायत मिल जाए और यह कुफ़्र पर न मरें। अत: आप रज़ियल्लाहु अन्हु ढील देते थे और उनके स्पष्ट बग़ावत के कर्यों को केवल इरादा बग़ावत से ताबीर करके सज़ा को पीछे डालते चले जाते थे।

इस घटना से यह भी मालूम होता है कि सहाबा उन लोगों से बिल्कुल मुतनफ़्फ़िर थे क्योंकि प्रथम तो स्वयं वह वर्णन करते हैं कि केवल तीन मदीना वाले हमारे साथ हैं अर्थात उपद्रवियों ने केवल तीन मदीना वालों का नाम लिया जो उन के साथ थे इससे ज़्यादा नहीं। यदि और सहाबा भी उनके साथ होते तो वह उनका नाम भी लेते। दूसरे साहाबा रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपने अमल से यह भी साबित कर दिया कि वह उन लोगों के कार्यों से घृणा करने वाला थे और उनके कार्यों को ऐसा शरीयत के विरुद्ध समझते थे कि सज़ा क़तल से कम उनके निकट जायज़ ही नहीं थी। यदि सहाबा उनके साथ होते या अहल मदीना उनके हम-ख़याल होते तो किसी मज़ीद हीला-और-बहाने के इन लोगों को कोई ज़रूरत ही नहीं थी। उसी वक़्त वे लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल कर देते यदि मदीना वाले बहुत सारे उनके साथ होते और उनकी जगह किसी और व्यक्ति को खिलाफ़त के लिए मुंतख़ब कर लेते। परन्तु हम देखते हैं कि अतिरिक्त इस के कि यह लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़तल में सफल होते स्वयं उनकी जानें सहाबा की नंगी तलवारों से ख़तरे में पड़ गई थीं और केवल उसी रहीम-और-करीम वजूद की इनायत-और-मेहरबानी से ये लोग बच कर वापस जा सके जिसके क़तल का इरादा ज़ाहिर करते थे और जिसके विरुद्ध इस क़दर उपद्रव कर रहे थे। इन उपद्रवियों के द्वेष और तक़्वा से असमानता पर आश्चर्य आता है। इस घटना से उन्होंने कुछ भी फ़ायदा नहीं उठाया। उनके एक एक आरोप का ख़ूब जवाब दिया गया और सब आरोप ग़लत और बे-बुनियाद साबित कर दिए गए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का रहम-ओ-करम उन्होंने देखा और हर एक व्यक्ति की जान इस पर गवाही दे रही थी कि इस व्यक्ति का मसील उतना रहम करने वाला इस वक़्त दुनिया के पर्दे पर नहीं मिल सकता परन्तु अतिरिक्त इसके कि अपने गुनाहों से तौबा करते, अन्यायपूर्ण कार्य पर शर्मिंदा होते, अपनी ग़लतीयों पर नादिम होते, अपनी शरारतों से रुजू करते। ये लोग द्वेष की आग में और भी ज़्यादा जलने लगे और अपने लाजवाब होने को अपना अपमान और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बहुत ज़्यादा माफ़ करने को और अपनी योजनाओं का प्रतिफल समझते हुए भविष्य के लिए अपनी बक़ीया तजवीज़ के पूरे करने की तदाबीर सोचते हुए ये लोग वापस चले गए।

(उद्धरित इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 293 से 296)

ये सिलसिला अभी जारी है। भविष्य में इन शा अल्लाह (वर्णन) होगा।

इस वक़्त मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ जिनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। उनमें सबसे पहले तो एक शहीद हैं अब्दुल क़ादिर साहिब पुत्र बशीर अहमद साहिब क्लिनिक स्थान बाज़ीद ख़ैल पिशावर पर काम करते थे। उनको 11 फ़रवरी को शहीद किया गया था। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

तफ़सीलात के अनुसार अब्दुल क़ादिर साहिब अपने चचा मरहूम डाक्टर मंज़ूर

अहमद साहिब के क्लीनिक स्थित बाज़ीद ख़ैल पिशावर पर काम करते थे। शहीद मरहूम अन्य लोगों जमाअत के साथ जो क्लीनिक पर मौजूद थे, एक कमरे में नमाज़ ज़ुहर के लिए जमा थे कि मरीज़ों की साईड से कमरे की bell हुई जिस पर अब्दुल क़ादिर साहिब ने दरवाज़ा खोला तो मरीज़ के रूप में वहां मौजूद लड़के ने उन पर फायरिंग कर दी जिस से वह शदीद घायल हो गए। सीने में दो गोलीयां लगीं। फ़ौरी तौर पर हस्पताल ले जाया गया जहां ज़ख़मों की अत्याधिकता के कारण अब्दुल क़ादिर साहिब शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। शहीद मरहूम की आयु 65 वर्ष थी। बहरहाल पुलिस ने पकड़ लिया या लोगों ने क़ातिल को पकड़ कर पुलिस के सपुर्द कर दिया। शहीद मरहूम की फ़ैमिली को अन्य अहमदी फ़ैमिलीज़ के साथ लम्बे अर्से से शदीद मुख़ालिफ़ाना हालात का सामना था। 19 जनवरी 2009 ई. को मज़हबी इंतिहा पसंदों ने इसी क्लीनिक पर हमला कर दिया था जिसके नतीजा में श्रीमान अब्दुल क़ादिर साहिब की टांग में गोली लगी थी जिसके आधार पर पिशावर से हिज्रत पर मजबूर हुए थे और समय के बाद पिशावर जा कर रिहायश पज़ीर हो सके थे। वर्तमान मुख़ालिफ़ाना लहर के नतीजा में तक़रीबन दो महीने पहले पुन: जमाअत की हिदायत के नतीजा में रब्वा हिज्रत पर मजबूर हुए। उनकी फ़ैमिली अब रब्वा में ही मुक़ीम है। जबकि शहीद मरहूम स्वयं नौकरी के कारण बाज़ीद ख़ैल में वर्णित क्लीनिक पर चले गए और वहीं रहते रहे थे।

शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा श्रीमान निज़ामुद्दीन अहमद के द्वारा हुआ जिन्हों ने प्रथम खिलाफ़त के समय में बैअत करके अहमदियत में शमूलीयत की सआदत पाई। उनके दादा के दो बड़े भाई थे। डाक्टर फ़तह दीन साहिब सिवल-सर्जन पिशावर और इंजनीयर अब्दुल लतीफ़ साहिब। डाक्टर फ़तह दीन साहिब ने ज़माना-ए-तालिब इलमी में 1902 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा की ख़बर सुनकर क़ादियान जा कर ज़यारत की थी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उन पर प्रेम का हाथ भी रखा था और फ़रमाया था कि बहुत अच्छा बच्चा है तब भी यह बैअत नहीं कर सके। बाद में यह यहां यू.के. में स्कॉलरशिप पर आए। यहां डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त की। फिर उन्होंने 1908 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात की ख़बर सुन कर क़ादियान जा कर प्रथम खिलाफ़त के समय में बैअत की। उनके दादा के दूसरे भाई अब्दुल लतीफ़ साहिब इंजनीयर थे उन्होंने भी प्रथम खिलाफ़त के समय में अपने भाई के साथ ही बैअत की। दोनों भाईयों की तहरीक पर ख़ानदान के अन्य लोगों जिनमें शहीद मरहूम के दादा भी शामिल थे कुछ समय बाद बैअत करके अहमदियत में शामिल हुए।

शहीद मरहूम बेशुमार विशेषताएँ के हामिल थे। खिलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत थी। जमाअती ओहदेदारान से इंतिहाई प्रेम का संबंध था। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। इस की वजह से मुख़ालिफ़ाना हालात का सामना भी करना पड़ा। इन मुख़ालिफ़ाना हालात की वजह से पिछले दो वर्षों में सात बार घर तबदील किया परन्तु ख़ुदा के फ़ज़ल से अहमदियत पर क़ायम रहे। तहज्जुद और नमाज़ों के अतिरिक्त तिलावत क़ुरआन-ए-करीम के सख़्ती से पाबंद थे। अत्याधिक शफ़ीक़ और मिलनसार थे। ज़िंदगी-भर कभी किसी से झगड़ा नहीं किया। उनकी पत्नी ने बताया कि ज़िंदगी में काई बार उतार चढ़ाव आए लेकिन उन्होंने कभी भी आक्रामक रुख नहीं अपनाया और मैं जब उनसे सख़्ती में कोई बात कर लेती तो वह फिर भी हमेशा नरमी से जवाब देते। बच्चों से हमेशा शफ़क़त और मुहब्बत का सुलूक रखा। शहादत की बड़ी शिद्दत से ख़ाहिश थी। हमेशा कहते यदि कभी आज़माईश का वक़्त आया तो खिलाफ़ते अहमदिया से दूरी के अतिरिक्त मौत को प्राथमिकता दूँगा। फिर यह लिखती हैं कि नमाज़ों की अदायगी का यह रंग था कि घर वाले उनको कुछ दफ़ा सज्दे की हालत में छू कर देखा करते थे कि ख़ुदा-ना-ख़ासता सज्दे में कहीं कुछ हो तो नहीं गया, लम्बे सज्दे में पड़े हुए हैं। शहीद मरहूम को बाज़ीद ख़ैल में मुंतज़िम तर्बीयत की हैसियत से भी जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। शहीद मरहूम के पीछे रहने वालों में पत्नी साजिदा क़ादिर साहिबा के अतिरिक्त चार बेटे शामिल हैं और पाँच बेटियां। अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और पीछे रहने वालों का भी स्वयं सहायक हो। उनके बच्चों को भी उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा अकबर अली साहिब असीराने राहे मौला का है जो इब्राहीम साहिब के बेटे थे। शौकत आबाद कॉलोनी ज़िला ननकाना के रहने वाले थे। अकबर अली साहिब असीराने राहे मौला शेखोपूरा जेल में 16 फ़रवरी 2021ई. को हार्ट-अटैक के कारण वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके दो साथी और थे। 2 मई 2020 ई. को उनके विरुद्ध मुक़द्दमा दर्ज हुआ था और हाईकोर्ट में अक्तूबर में ज़मानत कीconfirmation का तिथि पर अदालत ने उनकी जो अंतरिम ज़मानत थी निरस्त कर दी और गिरफ़्तारी का हुक्म दिया। बहरहाल ये तीनों साथी गिरफ़्तार हुए। फिर मजिस्ट्रेट ननकाना साहिब ने एक दरख़ास्त पर एक तरफ़ा सुनवाई के बाद हमारा पक्ष सुने बग़ैर जनवरी 2021ई. को 295 C का इज़ाफ़ा कर दिया जो एक और ख़तरनाक दफ़ा है। बहरहाल मरहूम साढ़े चार महीने से कैद की हालत में थे। वफ़ात तक उनकी उम्र 55 वर्ष थी। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से निज़ाम वसीयत में शामिल थे।

मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके पिता श्रीमान इब्राहीम साहिब के द्वारा से हुआ जिन्हों ने अपने भाई श्रीमान मियां इस्माईल साहिब के साथ 1920 ई. में दूसरी खिलाफ़त के समय में बैअत की थी। अकबर अली साहिब फ़ौज में भर्ती हुए। तेईस वर्ष फ़ौज में बहैसीयत हवालदार ख़िदमत की। सोला वर्ष पहले फ़ौज से रिटायर्ड हुए और इसके बाद सैक्योरिटी गार्ड का काम करते रहे। बहुत ज़िम्मेदार और बहादुर इन्सान थे। असीरी से क़बल बैंक के सैक्योरिटी गार्ड के तौर पर काम कर रहे थे। इस बैंक के मैनेजर को एक मुख़ालिफ़ ने शिकायत की कि अकबर अली को आपने मुलाज़मत दे रखी है यह तो काफ़िर है। बैंक मैनेजर ने उत्तर में कहा कि मैं हर सुबह आके रिकार्डिंग देखता हूँ। सी. सी. टी. वी. कैमरे की रिकार्डिंग चैक करता हूँ। अकबर अली रात को नफ़ल अदा करते हैं। तिलावत करते हैं। रमज़ान के रोज़े रखते हैं। यह व्यक्ति काफ़िर कैसे हो सकता है? बहरहाल कोई बड़ा जुर्रत मंद मैनेजर था। मरहूम को बहैसीयत सदर जमाअत छ: वर्ष ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। असीरी से क़बल बहैसीयत सैक्रेटरी माल ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। ग़रीबों के हमदरद, मेहमान-नवाज़ी के अतिरिक्त ख़ानदान के सब लोगों से आपसी मुहब्बत का संबंध था। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। हमेशा तर्क पूर्ण बात करते जिसकी वजह से मुख़ालिफ़ाना हालात का सामना रहा। सैक्योरिटी गार्ड की मुलाज़मत भी मुख़ालिफ़त की वजह से छोड़नी पड़ी। पीछे रहने वालों में दो पत्नियाँ ज़ीनत बी-बी साहिबा और फ़ज़ीलत बी-बी साहिबा हैं। इसके अतिरिक्त एक बेटा है उन्नीस वर्ष का और एक बेटी है सोला वर्ष की। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहमत का सुलूक फ़रमाए और दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी औलाद का भी हाफ़िज़-ओ-नासिर हो और उनको उनकी नेकियों पर भी चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

उगला वर्णन ख़ालिद मेहमूदुल हसन भट्टी साहिब का है जो आज कल रब्वा में तहरीक जदीद में वकील लुल्माल सालिस थे। इसी तरह नायब सदर अन्सारुल्लाह भी थे और नायब अफ़्सर जलसा सालाना भी थे। ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट में 67 वर्ष की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके दादा बाबुल ख़ान भट्टी साहिब ने अहमदियत क़बूल की थी लेकिन ख़ालिद मेहमूदुल हसन भट्टी के पिता जो थे उन्होंने अहमदियत क़बूल नहीं की थी। उनको शरह सदर नहीं थी। पिता ने कर ली थी। बेटे ने नहीं की थी। बहरहाल कहते हैं उनका डेरा था, ज़मींदारी करते थे। एक दिन डेरे पर बैठे हुए थे तो ख़ालिद महमूद के पिता भी वहीं चादर तान कर लेटे हुए थे तो वह ग़ैर अहमदी मौलवी जिसकी मस्जिद में उनके पिता नमाज़ पढ़ने जाया करते थे उनका वहां से गुज़र हुआ तो वह भी बैठ गए और गुफ़्तगु का विषय अहमदियत की तरफ़ चल पड़ा तो बातों-बातों में मौलवी ने यह इक़रार कर लिया कि वास्तव में अहमदियत सच्ची है। इस पर उनके पिता ने फ़ौरन अपने मुँह से चादर हटाई और उठ कर बैठ गए और कहा कि यदि अहमदियत सच्ची है तो फिर हमें गुमराह क्यों करते हो? कहते हैं अब जो तू ने मुझे गुमराह किया कि अहमदियत झूठी है और उसे क़बूल न करो और अपने पिता के पीछे न चल पड़ो तो बहरहाल सुन लो कि फिर जिधर सच्चाई है आज से मैं भी उधर ही हूँ। फिर उन्होंने जा कर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत कर ली। ख़ालिद मेहमूदुल हसन भट्टी साहिब ने पंजाब यूनीवर्सिटी से बी.ए. के बाद 1978 ई. में पोलीटिक्ल साईंस में और 1980 ई. में हिस्ट्री में एम.ए. की। फिर दो वर्ष बतौर लेक्चरर गर्वनमैंट सर्विस की। फिर दो वर्ष के बाद अस्तीफ़ा दिया। 1982 ई. में अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी। विभिन्न हैसियतों से क़रीबन 38 वर्ष तक जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 1982 ई. में उनका तक़र्रुर वकालत तामील-ओ-तनफ़ीज़ में हुआ था। फिर आप नायब वकील भी रहे। फिर वकीलुद्दीवान निर्धारित हुए। फिर आप वकील लुल्माल सालिस थे। फिर

इंडोनेशिया, सिंगापुर, बर्मा, श्रीलंका, नेपाल, योगंडा इत्यादि के दौराजात करने की भी उनको तौफ़ीक़ मिली। जहां भी दौरों पर जाते थे बड़ी गहराई से जा के सारे जायज़े लेते थे और उनकी रहनुमाई करते थे और उन जमाअतों में जहां यह गए हैं खासतौर पर बर्मा में और श्रीलंका में तो बहुत कुछ उन जमाअतों ने सीखा है और वहां के लोग इस का इक़रार भी करते हैं। कई मुझे ख़त लिख रहे हैं कि हमने बहुत कुछ सीखा और निज़ाम के बारे में सही मार्गदर्शन भट्टी साहिब ने हमारा किया और खिलाफ़त से संबंध को जोड़ने में बहुत किरदार अदा किया। फिर इसी तरह खुद्दामुल अहमदिया की मर्कज़ी आमला और अन्सारुल्लाह की मर्कज़ी आमला में भी रहे और विभिन्न कमेटीयों के मैंबर भी रहे। क़ज़ा बोर्ड के मैंबर भी रहे। उनकी पत्नी नुसरत नाहीद साहिबा हैं उनको अल्लाह तआला ने दो बेटीयों और एक बेटे से नवाज़ा। एक बेटा ख़ुर्रम उस्मान यहां यू.के. में हमारे एम.टी.ए. में काम कर रहा है। वाक़िफ़ ज़िंदगी है।

उनकी पत्नी साहिबा कहती हैं कि एम.ए. पोलीटिक्ल साईंस करने के बाद अपने पिता से उन्होंने कहा कि मैं एम.ए. हिस्ट्री भी करना चाहता हूँ तो उन्होंने कहा कि जितना मर्ज़ी चाहे पढ़ लो लेकिन याद रखो कि यदि नौकरी करनी है तो फिर जमाअत की करनी हैं। कहती हैं 43 साला शादी का समय है इस में हमेशा शफ़क़त का सुलूक रहा। जब भी दौरों से वापस आते हमेशा वाकिया सुनाते कि अल्लाह तआला ने किस तरह उनके साथ प्यार का सुलूक किया। बच्चों के लिए शफ़ीक़ बाप थे। हर बच्चे की जायज़ ख़ाहिश पूरी करने का प्रयास करते। उनकी बड़ी बेटी डाक्टर सायमा हैं। वह कहती हैं कि मैंने वीज़ा अप्लाई किया था। दो दफ़ा रेजेक्ट हो गया था। तीसरी दफ़ा फिर मैंने अप्लाई किया तो भट्टी साहिब समय पर बाहर जा रहे थे तो उसने कहा कि आप चंद दिन आगे कर लें क्योंकि वीज़े की तारीख़ आ रही है एंबेसी जाना है। तो उन्होंने कहा यह नहीं हो सकता। तुम अकेली जाओ क्योंकि मैं ख़ुदा तआला की ख़ातिर यह यात्रा कर रहा हूँ, अल्लाह तआला फ़ज़ल करेगा। और इस दफ़ा फिर उस बच्ची का वीज़ा भी लग गया। फिर छोटी बेटी कहती हैं कि बड़े नर्म-दिल बाप थे। बहुत नरमी से पेश आते। कभी हमें डाँटा नहीं। बड़े प्यार से समझाते थे। जमाअती काम को हमेशा प्राथमिकता देते। घर का चाहे कितना ही ज़रूरी काम होता पहले दफ़्तर के काम निपटाते फिर घर आते। हर वक़त जमाअती ख़िदमत के लिए तैयार रहते। मुहब्बत और लगन से जमाअती काम करते। दीन को दुनिया पर फ़ौक़ियत देते। और यह तो मैंने भी देखा है कि बड़ी मेहनत से काम करने वाले थे और बड़ी वफ़ा से और वक़्फ़ की रूह को क़ायम रखते हुए उन्होंने हमेशा ख़िदमत की है। एक बेटी कहती है कि जब भी कोई कठिन वक़्त आया हमेशा हमें अल्लाह तआला पर भरोसा रखने की तलक़ीन की और यही कहते थे कि अल्लाह नहीं छोड़ेगा और कभी अल्लाह तआला ने फिर छोड़ा भी नहीं। उनके बेटे कहते हैं कि जब से हम ने होश सँभाला है उन को जमाअत की ख़िदमत करते ही देखा है। जब भी कोई कठिनाई आती या आज़माईश आती तो हमेशा यही कहते कि मैं क्योंकि दीन की ख़िदमत कर रहा हूँ, अल्लाह तआला का काम कर रहा हूँ अल्लाह मेरे काम कर देगा और अल्लाह फिर अपना फ़ज़ल भी फ़रमाता और उनके काम भी आसान हो जाते। हक़ीक़ी तौर पर उन्होंने वक़्फ़ की रूह को क़ायम किया लेकिन साथ ही यह भी कहते हैं कि जमाअती मसरुफ़ियात के बावजूद घर के समस्त फ़रायज़ में कभी कोताही नहीं की। हर एक चीज़ की मुकम्मल देख-भाल स्वयं किया करते थे।

लईक आबिद साहिब तहरीक जदीद में मशीरे क़ानूनी हैं 38 वर्ष से उनके साथ हूँ। जमाअती रवायात के अमीन और उनका पास रखने वाले थे। बहुत सी विशेषताओं में से एक यह भी उनकी ख़ूबी थी कि बड़ी बारीकी से जमाअती अम्वाल की हिफ़ाज़त करना भी बहुत ज़रूरी समझते थे। उनके एक क्लास फ़ैलो मुहम्मद इदरीस साहिब कहते हैं कि वक्फ के बाद वह चुप चाप रहने वाले एक मुनफ़रद शख़्सियत बन के उभरे। खिलाफ़त से मुहब्बत शायद उनके अंग-अंग में सरायत कर चुकी थी। ख़लीफ़-ए-वक़्त की इताअत उनका ओढ़ना बिछौना बन गई थी। हर वक़त दीनी ख़िदमत में लगे रहना उनका प्रिय कार्य बन चुका था। वकालत माल सालिस के एक कर्मचारी हैं वह कहते हैं कि दफ़्तर में जो भी डाक आती उस को पेंडिंग (pending) नहीं करते थे। फ़ौरी कार्रवाई करते और हमें हिदायत थी कि आज का काम आज ही करें। ज़िंदगी का तो पता कोई नहीं, कल अवसर मिलता है या नहीं। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा पाकिस्तान में भी और बैरून-ए-मुल्क जहां भी गए बड़ा अच्छा प्रभाव क़ायम किया और ख़िदमत की भावना से काम किया और बड़ी वफ़ा से अपने वक़्फ़ को निभाया। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अगला वर्णन श्रीमान मुबारक अहमद ताहिर साहिब मशीरे क़ानूनी सदर अंजुमन अहमदिया का है। उनकी 17 फ़रवरी को ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट में 81 वर्ष की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके हाँ ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता मुहतरम सूफ़ी ग़ुलाम मुहम्मद साहब के द्वारा 1927 ई. में आई थी। जब उनको क़ादियान में जमाअत के क़ियाम का इलम हुआ तो अपने अज़ीज़ों के साथ फ़ैसला किया कि क़ादियान जा के देखा जाए। इसलिए 1 926 ई. में थरपारकर सिंध से क़ादियान में जलसा में शामिल होने के लिए गए और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और जमाअत से बड़े मुतास्सिर हुए लेकिन बैअत नहीं की। अगले वर्ष फिर उन्होंने इरादा किया लेकिन अन्य दोस्तों ने इंकार कर दिया। बहरहाल यह अगले साल 1927 ई. में जब गए तो वहां जा कर जलसा सुना और इसके बाद बैअत कर ली। उस वक़्त उनकी उम्र 28 वर्ष थी। उनका जो गांव है कट्टर अहल-ए-हदीस था। बड़ी मुख़ालिफ़त हुई। ससुराल वालों ने उनकी बीवी को यह कह कर वापस बुला लिया कि यह काफ़िर हो गया है लेकिन बहरहाल कुछ समय बाद बीवी ने कहा कि मैंने उसको देख लिया है कि काफ़िर होने के बाद तो पहले से ज़्यादा मुस्लमान हो गया था। तो यह वापस आ गई और कहा में नहीं समझती उनसे अलैहदा रहने की कोई वजह हो। बहरहाल पूरे गांव ने इस फ़ैमिली का बाईकॉट कर दिया यहां तक कि गांव में पानी लेने के लिए कुँआं था इस कुँवें पर पानी भी बंद कर दिया। कई मील दूर जा कर पानी लाना पड़ता था। कहते हैं कुछ हफ़्ते गुज़रे थे कि गांव वालों के कुँवें का पानी सूख गया और फिर गांव वालों को ख़्याल आया। उन्होंने कहा कि हमने सूफ़ी साहिब का पानी बंद किया था इसलिए हमारे गांव का पानी बंद हो गया है। इसके बाद दुबारा कुँआं तैयार करने लगे तो उनके पास आए कि आप सबसे पहले अपना चंदा डालें क्योंकि आप इस में पैसे डालेंगे तो कुँवें से पानी भी निकलेगा और जारी भी रहेगा। बहरहाल रिश्तेदारों ने अहमदियत क़बूल तो नहीं की लेकिन इस घटना के बाद उनकी मुख़ालिफ़त बंद कर दी।

उनकी पत्नी राशिदा प्रवीन साहिबा हैं और अल्लाह तआला ने उनको चार बेटों और दो बेटीयों से नवाज़ा। एक बेटे हाफ़िज़ एजाज़ अहमद ताहिर यहीं इस्लामाबाद में हैं। मुरब्बी सिलसिला हैं। जामिआ अहमदिया यू.के. में पढ़ाते हैं। दूसरे बेटे नस्र अहमद ताहिर वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं। रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ कैनेडा में काम कर रहे हैं।

श्रीमान मुबारक ताहिर ने 1968 ई. में एम.ए. इकनॉमिक्स किया। फिर 1969 ई. में एल. एल. बी. की डिग्री प्राप्त की और फिर जनवरी 1970 ई. उनका वक़्फ़ मंज़ूर हुआ और वकालत ऊलिया में बतौर मुहर्रिर दर्जा प्रथम उनका तक़र्रुर हुआ। फिर उन को 5 फ़रवरी 1971 ई. को बतौर टीचर युगांडा भिजवा दिया गया। 1972 ई. में उनकी वापसी हुई। वहां से फिर वकालत माल सानी में कुछ काम की तौफ़ीक़ मिली। फिर हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह सानी ने 1976 ई. में आपको

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

लाहौर में विभिन्न वुकला के साथ इन्कम टैक्स और जायदाद के काम की ट्रेनिंग दिलवाई। कौंसल में enrol भी हुए। 1970 ई. में आप तहरीक जदीद के मुशीर क़ानूनी निर्धारित हुए। एक जुलाई 1983 ई. को ख़लीफ़तुल-मसीह राबे ने उनको उसके साथ मुशीर क़ानूनी सदर अंजुमन अहमदिया भी निर्धारित फ़रमाया। वफ़ात तक उसी ख़िदमत पर आधारित थे। उनका ख़िदमत का समय पच्चास वर्ष से ज़ायद है। मर्कज़ी खुद्दामुल अहमदिया में भी उनको विभिन्न विभागों में मुहतमिम के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली।

उनकी पत्नी राशिदा प्रवीण साहिबा कहती हैं कि हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ घर में दाख़िल होते। सलाम करते और पहले नमाज़ अदा करते फिर खाना खाते। फिर कहती हैं कि सब खुलफ़ा के साथ गुज़रे हुए वाकेयात की बे पनाह यादें थीं। जब अपने ख़ानदान के बच्चों के साथ बैठते तो ईमान अफ़रोज़ घटनाओं का वर्णन करते। खिलाफ़त के साथ जुड़े रहने की बरकात से अल्लाह के इफ़ज़ाल और इनाम मिलने का बताते। ख़ामोशी से ज़रूरतमंदों की मदद करते कि हमें भी पता नहीं लगता था और स्वयं कभी वह मदद लेने वाला आ के बता जाता था किसी द्वारा से इज़हार कर देता था तो फिर पता लगता था। दूसरों का दुख बांटने वाले और ख़ुशी में ख़ुश। नवाफ़िल अदा करते। तिलावत करते। दुरूद शरीफ़ पढ़ते। कहते थे कि वाक़िफ़ ज़िंदगी के काम की कामयाबी ख़ुदा तआला अपने ज़िम्मा ले लेता है। तवक्कुल अल्लल्लाह (ख़ुदा पर भरोसा) करें, दुआ करें, इस्तिग़फ़ार करें और खिलाफ़त से मुहब्बत करें और दुआ के लिए ख़लीफ़-ए-वक़्त को लिखें। यह बहुत ज़रूरी है और ये सारी बातें सच्ची हैं। बड़ा तवक्कुल था उनमें। बड़े बड़े कठिन काम भी, मैंने देखा है जब मैं नाज़िर आला था तब भी, इस से पहले भी कुछ मुआमलात में उनके साथ वास्ता पड़ा। बड़ा तवक्कुल होता था कि जमाअती काम है, ख़लीफ़ा वक़्त की दुआएं हैं, हो जाएगा इन शा अल्लाह।

सदक़ा-ओ-ख़ैरात और दुआओं के साथ काम शुरू करते थे और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से फिर कामयाबियां भी होती थीं।

उनके बेटे हाफ़िज़ एजाज़ साहिब कहते हैं कि उन्होंने एक घटना सुनाई कह 1967 ई. में जब ख़लीफ़ तुल मसीह सालिस ट्रेन के द्वारा से कराची की यात्रा पर जा रहे थे। रेल हैदराबाद स्टेशन पर कुछ देर के लिए रुकी। कसरत से अहमदी लोग हुज़ूर को मिलने के लिए वहां आए। हुज़ूर रेल के दरवाज़े पर खड़े थे। वहां से आप ने श्रीमान मुबारक ताहिर साहिब को हाथ के इशारे से बुलाया। इससे पहले उनसे कोई जान पहचान नहीं थी। कम से कम उनको यह ख़्याल था कि ख़लीफ़ा सालिस तो उनको नहीं जानते। बहरहाल कहते हैं मुबारक ताहिर साहिब भीड़ में तेज़ी से हुज़ूर की तरफ़ आए आगे बढ़े। जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचे तो हुज़ूर ने अपनी शेरवानी की जेब में से कुछ पैसे निकाल कर मुबारक ताहिर साहिब की जेब में डाल दिए और इसके बाद ट्रेन चली गई। तो मुबारक साहिब कहा करते थे कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने जो पैसे मेरी जेब में डाले थे उनकी बरकत से हमेशा मेरी जेब भरी रही। और यह हक़ीक़त भी है कि अल्लाह तआला ने उनकी जेब को भरा रखा और ग़ैरमामूली तरीक़े से उनको कुछ आमदनीयां होती रहीं और इसी तरह ही उन्होंने इस को ख़र्च भी किया। ग़रीबों पर और जमाअत पर बहुत ख़र्च करते थे।

बहरहाल कुछ समय बाद उन्होंने एक स्वप्न के आधार पर अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी। जब ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी तो उस वक़्त उनका रिश्ता हो चुका था, निकाह भी हो चुका था और यह हैदराबाद में थे तो रिश्तेदार महिला उनकी पत्नी को ईलाज करवाने के लिए ले के आएं। उनको भी बताया कि डाक्टर के पास जाना है। वहां से जब ट्रेन से उतरे तो इस रिश्तेदार ख़ातून ने कहा कि सुना है तुमने वक़्फ़ कर दिया है तो वक़्फ़ वाले को तो खाने के पैसे भी नहीं होते। मुबारक साहिब ने फ़ौरन कहा कि अभी निकाह हुआ है रुख़्सती तो नहीं हुई आप अपनी बेटी को अपने घर ले जाएं यदि आप को इतना ही संदेह है। और नाराज़ हो कर वहां से चले गए। बहरहाल उन्होंने ग़ैरत रखी और अल्लाह तआला ने भी ग़ैरत रखी कि वक़्फ़ में रहते हुए उनको बेशुमार नवाज़ा, माली लिहाज़ से बहुत धनी थे।

ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के समय में आप मशीरे क़ानूनी थे। केसिज़ के लिए शहर से बाहर जाना पड़ता था और बसों पर यात्रा करते थे। उस वक़्त वहां रब्वा में हर एक के पास यात्रा की सहूलतें, कारों इत्यादि की सहूलत नहीं थी और ख़लीफ़तुल मसीह सालिस का यह हुक्म था कि जब भी यात्रा से वापस आओ तो आ के मुझे रिपोर्ट करनी है। कहते हैं एक बार बहुत देर हो गई। रात को फ़ज्र की नमाज़ से केवल दो घंटे पहले मैं रब्वा पहुंचा। मैंने सोचा कि अब जा के हज़रत ख़लीफ़ सालिस को इत्तिला दूँगा तो रात की नींद ख़राब करने की ज़रूरत नहीं पता नहीं नफ़ल पढ़ रहे हैं या नमाज़ें पढ़ रहे हैं या सो रहे हैं तो बहरहाल दो घंटे पहले मैं पहुंचा और मैंने कहा फज्र की नमाज़ पर इत्तिला कर दूँगा। फ़ज्र की नमाज़ पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उनको देखा तो फ़रमाया कि मुबारक साहिब रात कब आए? उन्होंने कहा अभी डेढ़ दो घंटे पहले पहुंचा हूँ तो हज़रत साहब ने फ़रमाया कि यदि आ के मुझे उस वक़्त बता देते तो में भी चंद घड़ियाँ सो लेता। तुम्हारा इंतिज़ार करता रहा कि पता नहीं यात्रा से ख़ैरीयत से पहुंचे हो कि नहीं।

फिर उनके बेटे कहते हैं कि जब मैंने वक़्फ़ करके जामिआ जाने का इरादा किया तो मुझे कहने लगे कि वक़्फ़ तो इताअत का नाम है। तुम्हारी तबीयत में थोड़ी तेज़ी है और इससे वक़्फ़ नहीं चलता। वक़्फ़ तो केवल ख़ामोशी और इताअत के साथ ख़िदमत करने का नाम है। यदि तुम यह कर सकते हो तो बड़ी ख़ुशी की बात है अन्यथा मुझे यह नहीं पसंद कि तुम वक़्फ़ करो और फिर छोड़ दो। तो इस तरह उन्होंने नसीहत की, तर्बीयत की। अल्लाह के फ़ज़ल से अभी तक बेटे को निभाने की तौफ़ीक़ भी मिल रही है भविष्य में भी तौफ़ीक़ मिलती रहे। ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुतबात के समय घरवालों को हिदायत होती थी कि ख़ुतबा के समय हर काम को छोड़कर तवज्जा से ख़ुतबा सुनो। कोई नसीहत या हिदायत या माली तहरीक होती तो ख़ुतबा के ख़त्म होते ही इस तहरीक को अमली जामा पहनाते और साथ बच्चों को भी हिदायत करते।

मिर्ज़ा अदील अहमद जो अंजुमन में उनके अस्सिटैंट मुशीरे क़ानूनी हैं कहते हैं कि जहां तक मैंने मुशाहिदा किया है खिलाफ़त के सच्चे आशिक़ थे। आप को दुआ पर यक़ीन था। कोई भी परेशानी होती या ज़्यादा कठिन काम होता जिस के लिए आप को जाना पड़ता तो आप कहते नवाफ़िल में बड़ी दुआ की है, सदक़ा भी दिया है, ख़लीफ़ा वक़्त की ख़िदमत में लिखते हैं देखो अल्लाह फ़ज़ल फ़रमाएगा। और फिर यह कहते हैं कि बड़े ख़ुद्दार इन्सान थे लेकिन जमाअत के लिए यदि किसी दफ़्तर के चाय बनाने वाले या मददगार की मिन्नत करनी पड़े तो कोई आर नहीं समझते थे और अफ़सरों से राबिते के लिए हर संभवा माध्यम इस्तिमाल करते थे।

एक दफ़ा कोई फ़ैसला किया अंजुमन ने तो उनकी राय थी कि यदि इस फ़ैसला पर अमल किया गया तो जमाअत पर बुरा प्रभाव पड़ने की सम्भावना है, जमाअत पर इस का ग़लत प्रभाव पड़ने का इमकान है। उन्होंने मुझे कहा कि यह फ़ैसला ठीक नहीं लग रहा लेकिन फिर उन्होंने कहा कि ख़लीफ़ा वक़्त को हम अपनी राय लिख देते हैं। हमारा काम तो ख़लीफ़ा वक़्त तक अपनी राय पहुंचाना है आगे जो वह फ़ैसला करें उसी में बरकत है।

डाक्टर सुलतान मुबश्शिर कहते हैं कि अफ़िसरों से सम्बन्ध बनाने आते थे। हमेशा उनके सम्बन्ध को सिलसिला के मुफ़ाद के लिए इस्तिमाल किया। कठिन से कठिन हालात में भी उनके मुँह पर मुस्कुराहट क़ायम रहती थी। उनके चेहरे पर कभी घबराहट के आसार नहीं देखे। जमाअती मुक़द्दमात के सिलसिला में ऐसे स्थानों पर भी जाना पड़ता था जहां अन्य सम्भावना के अतिरिक्त जान का ख़तरा भी लाहक़ रहता था परन्तु इस बहादुर व्यक्ति ने कभी अपने फ़रायज़ से पीछे नहीं हटे और जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला ने उनको माली ससमृद्धि भी अता फ़रमाई थी। अल्लाह तआला उनकी बौंडज़ के द्वारा से बड़ी मदद करता था और बड़ी-बड़ी रकमें निकलती थीं। एक दफ़ा डाक्टर साहिब कहते हैं कि शायद पच्चास लाख का इनाम निकला तो इस में से क़रीबन साठ फ़ीसद उन्होंने विभिन्न मदात में और ग़रीबों की मदद में अदा कर दिया और यह कोई एक दफ़ा की घटना नहीं हमेशा यही उनका उसूल था। अल्लाह तआला बड़ी-बड़ी रकमें अता करता था और इस में से अधिकतर बड़ी-बड़ी रकमें यह चंदों में और ग़रीबों की मदद में दे दिया करते थे। उनकी दो बड़ी ख़्वाहिशें थीं। इसके लिए दुआ की तहरीक करते थे। एक यह कि आख़िरी सांस तक सिलसिला की ख़िदमत में रहें और दूसरे यह कि चलते फिरते दुनिया से विदा हो जाएं और किसी पर बोझ न बनें। अल्लाह तआला ने उनकी यह दोनों ख़्वाहिशें पूरी फ़रमाई। बेशुमार और खूबियां भी थीं। मैंने देखा है बड़े सब्र से और हौसले से काम करने वाले, कभी परेशा नहीं हुए। अल्लाह पर तवक्कुल ग़ैरमामूली था। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी नसलों को उनकी दुआओं का वारिस बनाए।

नमाज़ों के बाद इन सबकी नमाज-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा। इन शा अल्लाह

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इस समारोह में शामिल होने वाले समस्त लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ खाना खाने का सौभाग्य पाया।

समारोह

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ वापस बैयतुल सबूह तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का समारोह हुआ।

निमंलिखित पच्चीस लड़कों और लड़कीयों से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने क़ुरआन-ए-करीम की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

आमीन के समारोह में हिस्सा लेने वाले ख़ुशनसीब बच्चों के नाम ये हैं

अज़ीज़म रोशान अहमद काहलों, मुहम्मद अंसर अशर्फ़, अज़ीज़म ताहिर असलम काहलों, फ़ायज़ अहमद ऐवान, शाइस्ता ग़ौरी, राजा हस्सान, राजा रोशन, मुसव्विर रशीद, वलीद महमूद मीर, सफ़ीर सादिक़ जनजूआ।

अज़ीज़ा मलीहा अज़हर, अज़ीज़ा मलीहा अहमद, अज़ीज़ा दानिया अहमद, मलीहा ज़ैनब महमूद, अज़ीज़ा फ़ेज़ा जमशेद, अज़ीज़ा आफ़ीया अहमद, अज़ीज़ा ज़ुबेदा चौधरी, अज़ीज़ा इस्माईल अहमद,अज़ीज़ा जाज़िबा एजाज़, अज़ीज़ा फौज़िया अहमद, अज़ीज़ा वरदा यूसुफ़, अज़ीज़ा अरीशा नुसरत, अज़ीज़ा मनाहिल रहमान, अज़ीज़म निमल गुल, अज़ीज़ा राबिया लुक़्मान काहलों।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब, ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए

अख़बारात में मस्जिद मंसूर के उद्घाटन की ख़बरें

"मस्जिद मंसूर" आकिन के उद्घाटन के बारे में आज आकिन शहर के दो अख़बारात ने अपनी 26 मई 2015 ई. की अखबार में ख़बर प्रकाशित की। इसी तरह प्रोटैस्टैंट चर्च ने अपनी वेबसाइट पर मस्जिद के उद्घाटन की ख़बर दी। ख़बरों की तफ़सील निमंलिखित है।

(अख़बार Aachener Zeitung ने अपनी 26 मई 2015 ई. के प्रकाशन में "मस्जिद मंसूर" के हवाला से उद्घाटन की ख़बर देते हुए लिखा)

एक सम्मानीय मेहमान और एक अज़ीमुश्शान अमन का संदेश

ख़लीफ़ा मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने जो लंडन से पधार Feldstrasse के स्थान पर मस्जिद मंसूर का उद्घाटन किया

एक दम से लोग इधर उधर हुए और सब एक ओर को लौटे। अपनी गर्दनों को बल देते हुए सब उपस्थित गणों एक झलक देखने के प्रयास में लगे हुए हैं। एक camera team समस्त वाक़ियात film कर रही है। एक हैलीकाप्टर ड्रोन तसावीर के लिए हवा में उड़ रहा है। एक ओर खड़े हुए बच्चे, सम्मानीय मेहमान की आमद के अवसर पर ख़ैर मुक़द्दम के गीत गा रहे हैं।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद जो लंडन से आए हैं, वह दुनिया-भर के अहमदियों के ख़लीफ़ा हैं जिन की संख्या 10 मिलियन से भी ज़्यादा है। यह अहमदिया मुस्लिम जमाअत एक ऐसा इस्लामी फ़िर्क़ा है जो उन्नीसवीं सदी के अंत में क़ायम हुआ है। Aachen के अहमदियों के साथ जिनकी संख्या 200 तक है, ख़लीफतुल मसीह ने नई मस्जिद मंसूर का उद्घाटन किया जो Feldstrasse के स्थान पर स्थित है। इस के बनने की रक़म स्थानीय अहमदियों के चन्दों से मुम्किन हुई, इन अहमदियों की संख्या जर्मनी भर में 50 हज़ार के क़रीब है।

नाज़रीन की नज़र तुरंत 14 मीटर बुलंद मीनार और इसके साथ के 5 मीटर बड़े गुम्बद पर पड़ती है। इबादत-गाह का कुल प्लाट 150 मुरब्बा मीटर है और मस्जिद में 200 लोग को नमाज़ पढ़ने की जगह प्रदान की गई । तलगभग तीन वर्ष पूर्व 2012 ई. में इस की नींव का पत्थर रखा गया आज के दिन इसका उद्घाटन हो रहा है।

ख़लीफतुल मसीह ने उपस्थित गणों को आपस में अच्छा व्यवहार करने को कहा। फ़रमाया : अल्लाह तआला कोई ज़ालिम बादशाह नहीं बल्कि वह तो इन्सानों से प्यार और रहमानियत का व्यवहार फ़रमाता है। कई सौ लोगों ने ख़लीफतुल मसीह का भाषण, एक अस्थाई तौर पर लगाए गए टेंट में बैठ कर सुना, जिन में शहर के सियास्तदान भी शामिल थे।

(अख़बार Aachener Nachrichten ने भी अपनी 26 मई 2015 की प्रकाशित में मस्जिद मंसूर Aachen के उद्घाटन के हवाला से निमंलिखित ख़बर प्रकाशित की)

इस्लाम का दोस्ताना चेहरा

मस्जिद मंसूर का Feldstrasse के स्थान पर उद्घाटन हुआ। इसके उद्घाटन के लिए जमाअत अहमदिया आलमगीर के ख़लीफ़ा स्वयं लंडन से पधारे। धर्मों के मध्य की सद्भावना को उन्होंने ज़रूरी क़रार दिया।

एक ख़ुशी, फ़िज़ा में महसूस हो रही है। Feld strasse के क्षेत्र में मस्जिद मंसूर का उद्घाटन है। उद्घाटन के लिए जमाअत अहमदिया आलमगीर के ख़लीफ़ा पधार रहे हैं। ख़लीफतुल मसीह जो कि लंडन में रिहायश पज़ीर हैं दूसरी बार Aachen पधार रहे हैं। पहली बार नींव के पत्थर के अवसर पर था।

2003 ई. से वह दुनिया-भर में कई सौ मिलियन मुस्लमानों के रुहानी सरबराह हैं। वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पांचवें ख़लीफ़ा हैं। ख़लीफ़ा का इंतिख़ाब जमहूरी तौर पर जमाअत की एक इलैक्शन कमेटी से होता है। यह फिर ज़िंदगी-भर तक का होता है।

230 अहमदी इस क्षेत्र में आबाद हैं। मस्जिद के इर्दगिर्द पर्याप्त जगह उपस्थित है। इसके अतिरिक्त एक multi functional room है जिस में विभिन्न प्रोग्रामज़ और गेम्ज़ की जा सकती हैं।

इस समय इस क्षेत्र की जमाअत में औरतों की संख्या मर्दों के सम्बन्ध में ज़्यादा है। उनका एक अपना नमाज़ पढ़ने का कमरा है। महिलाएं ग्यारह वर्ष तक की आयु के बच्चों को साथ ले जाती हैं। एक sliding door से मर्दों की नमाज़ पढ़ने की जगह को अलग किया हुआ है दीवार पर स्पष्ट रूप से "अल्लाह एक है" लिखा हुआ है।

200 से अधिक लोग ख़लीफ़ा तुलमसीह का ख़ुशी से इंतिज़ार कर रहे हैं। उनमें विभिन्न लोग हैं और साथ मेयर Marcel Phillip साहिब भी उपस्थित हैं। बच्चियों का एक ग्रुप भी उपस्थित है। Aachen शहर के घुड़ सवार भी उपस्थित हैं जो सम्मानीय मेहमान का स्वागत करेंगे।

एक बड़ी गाड़ी सामने रुकती है। हाथ मिला रहे है और फूल दिए जा रहे हैं। बच्चों का ग्रुप ख़ैर मुक़द्दमी के गीत गा रहा है और बहुत से cameras की flashes चमक रही हैं। ख़लीफतुल मसीह ने मस्जिद की दीवार में लगी हुई तख़्ती से पर्दा हटाया और फिर टेंट में तशरीफ़ ले गए उद्घाटन का समारोह आयोजित हुआ।

वर्ष 2012 ई. में निर्माण का काम आरंभ हुआ। Modern ढंग से इमारत तैयार की गई। कुल जगह 2600 मुरब्बा मीटर की है, इबादत की जगह एक जो 50 मुरब्बा मीटर पर आधारित है जिसमें दो सौ नमाज़ियों के लिए जगह है। एक पाँच मीटर बुलंद गुम्बद भी है और 14 मीटर बुलंद मीनार है।

दीवारों को पूर्व की ओर design से ख़ूबसूरत किया हुआ है। और एक अहम बात यह थी कि पार्किंग के लिए पर्याप्त जगह उपस्थित है। मस्जिद की खिड़कियों पर अल्लाह तआला के निनानवे नामों में से कुछ नाम लिखे हुए हैं कुछ जर्मन में भी हैं।

अहमदिया जमाअत वह एक वाहिद मुस्लमान जमाअत है जो एक ख़लीफ़ा के हाथ पर जमा है। धर्मों के मध्य की हम-आहंगी को ख़लीफ़ा साहिब ने ज़रूरी क़रार दिया।

(अख़बार Aachener Nachrichten और अख़बार Aachener Zeitung यह दोनों प्रतिदिन प्रकाशित होने वाले अख़बार हैं और दोनों की 113, 495 की संख्या में सरकुलेशन है)

प्रोटैस्टैंट चर्च ने आकिन के सम्बन्ध में अपनी वेबसाइट पर ख़बर देते हुए लिखा है कि हफ़्ता : शाम को आकिन में मस्जिद मंसूर के उद्घाटन के अवसर पर मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने अपने जमाअत से कहा कि वह समस्त इन्सानों की सेवा करें। धार्मिक रहनुमा, जिन्हें उनके जमाअत के लोग ख़लीफ़ा और मौऊद मसीह का जांनशीन कहते हैं, ने कहा कि इस्लाम समस्त ईमान लाने वालों से इस बात का मांग करता है। ख़लीफ़ा साहिब ने कहा: "ख़ुदा कोई जाबिर बादशाह नहीं बल्कि वह इन्सानों को मुहब्बत और रहम देना चाहता है"और साथ अपने आप को इंतेहापसंद मुस्लमानों से अलग किया। आकिन के लार्ड मेयर ने उसे एक "ख़ुशकुन दिन" क़रार दिया। इस के बाद मस्जिद के सम्बन्ध में मालूमात लिखी हैं और कहा है कि जर्मनी के अमीर ने कहा कि मस्जिद एक बड़े दो ख़ानदानों के घर जितनी है।

ज़िला रेडीयो WDR ने भी ख़बर नशर की

27 मई बुधन के दिन 2015 ई.

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर

अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लंदन मर्कज़, रब्वा, क़ादियान और दुनिया-भर के विभिन्न देशों की जमाअतों की ओर से प्राप्त होने वाली डाक ,पत्र और रिपोर्ट मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा, इस डाक के अतिरिक्त जर्मनी जमाअत के लोग की ओर से भी प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में पत्र प्राप्त हो रहे हैं जिन्हें हुज़ूर अनवर मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से नवाज़ते हैं।

फ़ैमिली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सैशन में 41 फ़ैमिलीज़ के 138 लोग और 30 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस तरह संपूर्णता 168 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने हुज़ूर अनवर के साथ तसावीर बनवाने का भी सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करते हुए विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चीयों को चॉकलेट अता फ़रमाए :

आज अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी विभिन्न 45 जमाअतों से आई थीं। जिन में से कुछ फ़ैमिलीज़ और लोगों बड़ी लम्बी यात्रा करके पहुंचे थे। कासल (KASSEL) से आने वाले 200 किलोमीटर, OSNABRUCK से आने वाले 330 किलोमीटर, म्यूनख़ (MUNCHEN) से आने वाले 395 किलोमीटर, HANNOVER से आने वाले 350 किलोमीटर और बर्लिन (BERLIN) से आने वाले 550 किलोमीटर का लम्बी यात्रा करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे और जो कुछ घड़ियाँ उन्होंने अपने आक़ा के क़ुरब में गुज़ारी वह उनके सारे जीवन का सरमाया और उनके लिए और उनके बच्चों के लिए यादगार लमहात थे। अल्लाह तआला यह सआदत उनके लिए और उनके बच्चों के लिए फ़रमाए।

मुलाक़ातों का ये प्रोग्राम सवा एक बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहब "इंचार्ज प्रैस ऐंड मीडीया ऑफ़िस" और ऐडीशनल वकीले तब्शीर लंदन और ऐडीशनल वकीलुलमाल लंदन को बारी-बारी बुलाया फ़रमाया और विभिन्न मामलों के हवाला से हिदायात दें। इसके बाद अढ़ाई बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

HANAU शहर में मस्जिद बैयतुल उल-वाहिद का उद्घाटन

आज प्रोग्राम के अनुसार HANAU शहर में "मस्जिद बैयतुल उल-वाहिद" के उद्घाटन समारोह था।

सवा पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ यात्रा पर प्रस्थान के लिए अपनी रहने के स्थान से बाहर पधारे और दुआ करवाई और क़ाफ़ला बैयतुल सबूह से HANAU शहर के लिए रवाना हुआ। फ्रैंकफ़र्ट से HANAU शहर का दूरी 35 किलोमीटर है 45 मिनट की यात्रा के बाद छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की "मस्जिद बैयतुल उल-वाहिद" HANAU में तशरीफ़ आवरी हुई।

स्थानीय जमाअत के लोग पुरुष तथा औरतें, जवान, बूढ़े, बच्चे, बच्चीयां सुबह से ही अपने प्यारे आक़ा की बाबरकत आमद पर तैयारीयों में व्यस्त थे उनके लिए आज का दिन किसी ईद से कम नहीं था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम उनकी सरज़मीन पर पहली दफ़ा पड़ रहे थे प्रत्येक कोई बेहद ख़ुश था और अपने प्यारे आक़ा की आमद का मुंतज़िर था

जैसे ही हुज़ूर अनवर की गाड़ी बाहरी गेट से मस्जिद के सेहन में दाख़िल हुई तो जमाअत के लोग ने बड़े जोश से वालेहाना ढंग में नारे बुलंद किए और बच्चों और बच्चीयों के समूहों ने अपने हाथों में लिए हुए अहमदियत के झंडे और जर्मनी के राष्ट्रीय झंडा लहराते हुए दुआइया नज़्में और ख़ैर मुक़द्दमी गीत प्रस्तुत किए। प्रत्येक छोटा बड़ा अपने हाथ बुलंद करके अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कह रहा था। महिलाएं अपने प्यारे आक़ा के दीदार और दर्शन का सौभाग्य से फ़ैज़याब हो रही थीं।

सदर जमाअत HANAUआदरणीय मुबारक अहमद चठ्ठा साहिब, लोकल अमीर आदरणीय एहसान उल-हक़ साहिब और मुबल्लिग़ सिलसिला आदरणीय अर्बाब अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहते हुए हाथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया

इस अवसर पर HANAU शहर के CLAUS KAMINSKY साहिब और नैशनल सदस्य पार्लियामेंट FRAU MULLER साहिब, FRAU SCHULZ ASCHE साहिबा FRAU CHRISTINE BUCHHOLZ साहिबा भी इस समारोह में शामिल होने के लिए आए हुए थे। इन सभी लोगों ने भी हुज़ूर अनवर का स्वागत करते हुए हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी हुई तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के अंदरूनी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए और नमाज़ ज़ुहर और असर जमा करके पढ़ाई, जिसके साथ इस मस्जिद का उद्घाटन अमल में आया।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद, इससे जुड़े हाल और अन्य दफ़ातिर इत्यादि का नरीक्षण फ़रमाया। मर्दाना हाल के अतिरिक्त महिलाओं के लिए अलग-अलग हाल है और इस के अतिरिक्त एक मल्टी परपज़ हाल है इन तीनों हालों में संपूर्णता लगभग एक हज़ार लोग के लगभग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहां सदर जमाअत और ख़ुद्दाम, अंसार के दफ़ातिर के अतिरिक्त एक जमाअती किचन और लाइब्रेरी भी बनाई गई है। लजना के लिए उनके अलग-अलग तीन दफ़ातिर हैं।

इस से पूर्व यह जगह एक सुपर मार्कीट थी। जिसे बहुत सी तबदीलीयों के साथ मस्जिद की सूरत में तबदील किया गया है

नरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लजना हाल में भी तशरीफ़ ले गए जहां महिलाओं ने दर्शन का सौभाग्य पाया और बच्चीयों ने समूहों की सूरत में दुआइया नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करते हुए बच्चीयों को चॉकलेट अता फ़रमाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने मस्जिद के बाहरी सेहन में बादाम का पौधा लगाया। इसी तरह HANAU शहर के मेयर CLAUS KAMINSKY साहिब ने भी बादाम का एक पौधा लगाया।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के बाहरी सेहन में लगी हुई मारकी के अंदर तशरीफ़ ले आए। जहां "मस्जिद बैयतुल उल-वाहिद" के उद्घाटन के हवाला से समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो काशिफ़ अहमद जनजूआ विद्यार्थी कक्षा राबिया जामिया अहमदिया जर्मनी ने प्रस्तुत की और इसके बाद इसका जर्मन भाषा में अनुवाद अज़ीज़म मुसद्दिक़ अहमद जनजूआ ने किया।

इस के बाद आदरणीय अमीर साहिब जर्मनी ने अपना परिचयात्मक भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया

HANAU शहर दो सौ वर्ष पूर्व दो विभिन्न क्षेत्रों में तक़सीम था। 1903 में इस को शहर का दर्जा दिया गया। इस के एक हिस्सा में हॉलैंड से आकर लोग आबाद हुए। इस शहर की एक ख़ुसूसीयत यह है कि यहां बहुत से इलमी अदबी लोग आबाद हुए। नपोलीन भी कुछ अरसा रहा।

दूसरी जंग-ए-अज़ीम में यह शहर मुकम्मल तौर पर तबाह हुआ और इस शहर की आबादी केवल दस हज़ार बाक़ी रह गई। अब शहर की आबादी 90 हज़ार है और शहर बढ़ रहा है। हमारी मस्जिद इस शहर की तरक़्क़ी का एक हिस्सा है।

इस शहर में जमाअत वर्ष 2001 से उपस्थित है और 370 लोग पर आधारित है। यहां जमाअत नए वर्ष के आरंभ पर सफ़ाई,charity walk benefit game यूनीवर्सिटीज़ में लैक्चर, पौधे लगाने और अन्य विभिन्न प्रोग्राम करते हैं।

मस्जिद के हवाला से अमीर साहिब जर्मनी ने बताया कि इस से पूर्व यहां उस जगह पर एक ALDI MARKET होती थी। नए तौर पर मस्जिद की बनने के हवाला से बहुत मेहनत से काम करना पड़ा है।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 8 April 2021 Issue No.14

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

इस ज़मीन का रकबा लगभग 6000 मुरब्बा मीटर है, इस समस्त ज़मीन और इमारत की ख़रीद और फिर इस पर इमारत में बदलाव और नया बनने पर मजमूई ख़र्च 1.1 मिलियन यूरो हुआ है। इस मस्जिद के दो बुलंद मीनार हैं और उनकी ऊंचाई 12 मीटर है। मस्जिद के बाहरी सेहन में 104 गाड़ियों के लिए पुख़्ता पार्किंग उपस्थित है। यह जगह 13 सितम्बर 2012 को ख़रीदी गई और 22 अप्रैल 2014 को यहां निर्माण का काम शुरू हुआ और आज उसका उद्घाटन हो रहा है। अमीर साहिब जर्मनी ऐडरैस के बाद HANAU शहर के लार्ड मेयर CLAUS KAMINSKY साहिब ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह! मुझे आज बहुत ख़ुशी है कि जमाअत HANAU शहर की मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है और मैं इस अवसर पर उपस्थित हूँ।

उन्हें ने मेयर ने कहा कि शुरू से ही उन्होंने और इंतिज़ामीया ने मस्जिद के बनने के हवाला से पड़ोसियों को और इर्दगिर्द के फर्मों को इतमीनान और सुकून दिलवाया और उनके तहफ़्फ़ुज़ात को दूर किया और उनके तहफ़्फ़ुज़ात दूर करने में इस कारण से भी आसानी रही क्योंकि जमाअत अहमदिया अत्यधिक ही रवादारी और प्यार से प्रस्तुत आने वाली है।

मेयर साहिब ने कहा कि Multifunctional Hall की दीवार पर उन्हें जमाअत का यह माटो पढ़ने को मिला कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं"। यह बहुत ही प्यारा माटो है और यह बात बहुत उत्कृष्ट है कि इस हाल में लगाया गया है जहां अन्य धर्मों की मीटिंगज़ होंगी।

मेयर साहिब ने बताया कि पूरा संसार क़रीब हो रहा है और आपस में इकठ्ठा हो रहा है और HANAU शहर में 127 विभिन्न क़ौमों के लोग आबाद हैं और बीस विभिन्न धर्मों के लोग हैं।

जमाअत अहमदिया को जो यहां स्टेटस दिया गया है और जमाअत अपने हुक़ूक़ में चर्चों के बराबर है यह इस बात का सबूत है कि जमाअत अहमदिया आला इक़दार की पासदारी करती है।

मेयर साहिब ने कहा इस मस्जिद में एक दूसरे से रवादारी और एक दूसरे के सत्कार का समाज पैदा होगा। यह घर सब के लिए खुला है मुझे ख़ुशी है कि ख़लीफतुल मसीह की मौजूदगी में इस मस्जिद का उद्घाटन हुआ है।

इसके बाद सूबा HESSEN के ज़िलई कमिशनर ERIC PIPA साहिब जो मेंबर पार्लियामेंट भी हैं ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा। मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है कि आज इस उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित हूँ, आज के दिन हम सब इस जगह इस विशेष उद्देश्य के लिए इकट्ठे हुए हैं। यह इस बात की निशानी है कि हम खुल कर इस समारोह को मना रहे हैं। जमाअत का यहां मस्जिद बनाना, इस बात के प्रकटन के लिए, बिल्कुल दरुस्त मार्ग है कि आप इस जगह अमन के साथ मिल-जुल कर रहना चाहते हैं। इसी तरह आपस में इत्तिफ़ाक़ पैदा किया जा सकता है।

हमें इस बात से ख़ुशी है कि जमाअत अहमदिया समाज में अमन पैदा करने का प्रयास करती है । इसी तरह यह जमाअत Integration में आगे है। इन का मोटो "अमन सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" इस बात का स्पष्ट सबूत है । इसके अतिरिक्त जमाअत अहमदिया यहां अपना ख़ुतबा जुमा जर्मन भाषा में भी ज़रूर देती हैं जो बड़ी ख़ुशी की बात है।

जर्मनी में 4.1 मिलियन मुस्लमान आबाद हैं और उनकी 210 मसाजिद यहां उपस्थित हैं। 153 विभिन्न क़ौमों के लोग हमारे ज़िला MAIN KINZIG-KREIS में आबाद हैं । और सब आपस में मिलकर अमन और मुहब्बत से रहते हैं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

उद्देश्य सफ़लता के लिए ये पाँच तरीक़ ज़रूरी होते हैं। हज़रत नूह की क़ौम को ख़ुद इन तरीक़ों की तरफ़ तवज्जा दिलाते हैं और फ़रमाते हैं तुम यह पांचों तरीक़ इस्तिमाल कर लो। परन्तु फिर भी कामयाब नहीं होगे। क्योंकि एक छेवी चीज़ जिसके बग़ैर ये समस्त प्रयास व्यर्थ रह जाते हैं अर्थात तवक्कुल अल्लल्लाह (ख़ुदा पर भरोसा करना) वह तुम्हारे पास नहीं है बल्कि वह मेरे पास है। इस वजह से ख़ुदा तआला की सहायता मुझे हासिल है। अत: तुम समस्त कोशिशें कर लो। विजयी मैं ही रहूँगा।

नबियों को अपनी सदाक़त और ख़ुदा तआला के वादों पर कैसा यक़ीन होता है। न केवल यह कि वे मुख़ालिफ़ीन की मुख़ालिफ़त की परवा नहीं करते बल्कि उन्हें और भी ग़ैरत दिलाते हैं और इसके अतिरिक्त संतुष्ट होते हैं कि अंतत: हम ही जीत कर रहेंगे और अंतत: वैसा ही होता है। दूसरे चमत्कारों को नज़र अंदाज़ करके हक़ीक़त सच्चाई दिखने के लिए यही एक चमत्कार उनके ख़ुदा तआला की तरफ़ से होने के सबूत में काफ़ी होता है परन्तु अफ़सोस कि अंधी दुनिया देखती नहीं।

(तफ़सीरे कबीर, पृष्ठ 110 से 111 प्रकशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में दर्जा दौम (दुसरी श्रेणी) की नौकरी पर ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

शर्तें (1) प्रत्याशी की आयु 25 वर्ष से अधिक न हो (2) प्रत्याशी की शिक्षा कम से कम10+2 (45 प्रतिशत अंको के साथ) होनी चाहीए (3) प्रत्याशी उर्दू/ अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो। प्रति मिनट में 25 शब्दों की कम्पोज़िंग की तीव्रता हो। (4) इस विज्ञपन के बाद 2 महीने के अंदर जो निवेदन आएंगे उन्हीं पर ग़ौर होगा (5) निमंलिखित निसाब के अनुसार परीक्षा ली जाएगी, परीक्षा के हर भाग में सफ़ल होना अनिवार्य है।

भाग प्रथम : क़ुरआन-ए-करीम सादा पूर्ण, पहला पारा अनुवाद के साथ चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, नमाज़ मुकम्मल अनुवाद के साथ (30 अंक)

भाग दो : कशती नूह, बरकात दुआ, दीनी मालूमात लेख जमाअत अहमदिया के सिद्धानोतों के बारे में
नज़्म दुर्रे समीन (शाने इस्लाम) (20अंक)

भाग तीन : अंग्रेज़ी का मयार बारवी कक्षा तक के अनुसार (10+2)(20अंक)

भाग चार गणित दसवी कक्षा तक के अनुसार (20अंक)

भाग पांच साधारण ज्ञान (10अंक)

(6) लीखित परीक्षा में सफ़ल होने वाले प्रत्याशी का ही इंटरव्यू होगा (7) लीखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट-और-इंटरव्यू में सफ़लता की अवस्था में उम्मीदवार को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही उम्मीदवार सेवा के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के चिकित्सा परीक्षण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे (8) स्लैक्शन की अवस्था में उम्मीदवार को क़ादियान में अपनी रिहायश की व्यवस्था स्वयं करनी होगी (9) क़ादियान आने जाने का खर्च प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे। (नोट : लिखित परीक्षा और साक्षात्कार की तिथि से प्रत्याशीयों को बाद में अवगत किया जाएगा।

अधिक मालूमात के लिए संपर्क करें : नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516 -

मोबाइल : 09682627592 09682587713, दफ़्तर : 01872 - 501130

E-mail: diwan@qadian.in

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad